राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय दैनिक समाचार में
प्रेसनोट, नोटिस, वेपार संबंधित संपर्क करें
पता:- एस.टी.पी.आई-सुरत-395023
संपर्क नं.-7490923915
ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरांचल, उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा में प्रकाशित

सुरत-गुजरात, संस्करण मंगलवार 11 अगस्त 2026 वर्ष-9,अंक-190 पृष्ठ-08 मूल्य-01 रूपये

Website : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

अमित शाह जंतर-मंतर लाठीचार्ज मामले पर संसद में जवाब देंगे

रिजिजू बोले- विपक्ष को सुनना पड़ेगा, भाग नहीं सकते; विपक्ष गृहमंत्री के बयान पर अड़ा था

ट्रिब्यूनल्स रिफॉर्म्स बिल बिना चर्चा के पारित,विपक्ष ने संसद के बाहर प्रदर्शन किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। गृहमंत्री अमित शाह दिल्ली में छात्रों के प्रदर्शन और पुलिस एक्शन मामले पर सदन में जवाब देंगे। संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने सोमवार को लोकसभा में कहा कि शाह विस्तार से जवाब देंगे लेकिन विपक्ष को भरोसा देना होगा कि वह बहस से भागेगा नहीं। उन्हें गृहमंत्री का जवाब बिना हंगामा किए सुनना पड़ेगा।

हालांकि शाह कब बोलेंगे, रिजिजू ने इसकी जानकारी नहीं दी है। दिल्ली के जंतर-मंतर पर 20 जुलाई को प्रदर्शन कर रहे छात्रों पर पुलिस एक्शन को लेकर विपक्ष लगातार गृहमंत्री के बयान की मांग कर रहा है। शाह संसद परिसर में नियमित रूप से आ रहे हैं, लेकिन उन्हें सदन में नहीं देखा गया है।मानसून सत्र 20 जुलाई से चल रहा है। 13 अगस्त को इसका समापन है। तीन हफ्ते के दौरान लगातार हंगामे के कारण सदन की कार्यवाही बार-बार स्थगित हुई है। एंटी-पेपर लीक बिल पर बहस के अलावा किसी और मुद्दे पर चर्चा नहीं हुई है।

कांग्रेस ने अपने सभी सांसदों को व्हिप जारी किया - कांग्रेस ने अपने सभी सांसदों को व्हिप जारी किया और 10 अगस्त से 12 अगस्त के दौरान सदन में मौजूद रहने का आदेश दिया।

संसद में गतिरोध से स्पीकर ओम बिरला चिंतित, फ्लोर लीडर्स से की सदन चलाने में सहयोग की अपील

संसद के मौजूदा मानसून सत्र में लगातार जारी गतिरोध को लेकर लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सोमवार को चिंता जताई। बिजनेस एडवाइजरी कमेटी 'बीएसी) की

बैठक में स्पीकर ने सभी दलों के फ्लोर लीडर्स से सदन की कार्यवाही सुचारू और व्यवस्थित तरीके से चलाने में सहयोग करने की भावुक अपील की। स्पीकर ने कहा कि संसद लोकतंत्र का ऐसा मंच है जहां जनता से जुड़े मुद्दों को उठाया और उन पर व्यापक चर्चा की जानी चाहिए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सदन में प्रश्नकाल हो, महत्वपूर्ण विधेयकों पर चर्चा हो और सांसदों को अपने क्षेत्रों और जनता से जुड़े मुद्दे उठाने का अवसर मिले।

मायावती के भतीजे आकाश बोले

अखिलेश-राहुल 50 साल के बूढ़े, इन्हें अंकल कहूंगा

हाथरस (एजेंसी)। बसपा सुप्रीमो मायावती के भतीजे आकाश आनंद ने सोमवार को हाथरस में चुनावी रैली को संबोधित किया। अखिलेश यादव और राहुल गांधी को अंकल कहकर बुलाया। उन्होंने कहा- मैं 30 साल का हूं और अखिलेश जी 50 साल के। मैं 50 साल के वृद्ध को अंकल नहीं कहूंगा तो और क्या कहूंगा। हालांकि, अखिलेश की सही उम्र 53 साल है, जबकि राहुल की 56 साल है।

आकाश ने कहा- राहुल अंकल एक किताब लेकर घूमते हैं। संविधान की बात करते हैं। अगर किताब पलट दी जाए तो पता चलेगा कि उसके पन्ने खाली हैं। वे संसद में संविधान की बात करते हैं, लेकिन जिन राज्यों में कांग्रेस की सरकार है, वहां वही काम कर रहे, जो भाजपा यूपी में कर रही है।

आकाश आनंद ने भाजपा पर हमला करते हुए कहा- एथेनॉल पेट्रोल के नाम पर 110 रुपए में गन्ने का रस बेच रहे हैं। देश में सबसे बेकार एक्सप्रेस-वे बनाए जा रहे हैं।

संक्षिप्त समाचार

राम मंदिर चढ़ावा चोरी के विरोध में दिल्ली में जुटे साधू-संत

पीएम मोदी से की सख्त कार्रवाई की मांग

नई दिल्ली (एजेंसी)। अयोध्या राम मंदिर में हुए चढ़ावा चोरी के विरोध में देशभर से 100 से ज्यादा संत-महंत और महामंडलेश्वरों ने सोमवार को बाराखंबा रोड स्थित नेपाली दूतावास के पास एकत्रित होकर प्रदर्शन किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि हम यहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मामले में शामिल लोगों पर कार्रवाई करने के लिए ज्ञापन सौंपने को इकट्ठे

हुए हैं। प्रदर्शन में ज्ञापन देने के लिए शामिल इंद्रप्रस्थ पीठ के संत जगद्गुरु स्वामी रामानुजाचार्य ने कहा कि हम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मांग करते हैं कि ट्रस्ट में शामिल वे लोग जो भी मामले में संलिप्त हैं उनपर कार्रवाई कर जेल भेजा जाना चाहिए। इस कृत्य के चलते संतों को हेय दृष्टि से देखा जा रहा है। इससे सनातन धर्म को नुकसान हो रहा है। इसलिए किसी को भी बख्शा नहीं जाना चाहिए, न ही किसी को भी बचाया जाना चाहिए। पीएम आवास तक जाने की परमीशन नहीं होने के कारण सभी संतों को पुलिस ने मंडी हाउस से आगे नहीं जाने दिया गया।

मोहाली में छात्रा से 48 घंटे में 2 बार गैंगरेप

बेहोशी की हालत में फेंका, फ्रेंडशिप से मना किया था; पर्ची में आरोपी का नाम-मोबाइल नंबर मिला

मोहाली (एजेंसी)। मोहाली में 16 साल की छात्रा को किडनैप कर 48 घंटे में 2 बार गैंगरेप किया गया। एक आरोपी कई दिन से छात्रा से फ्रेंडशिप करने के लिए कह रहा था। छात्रा ने इनकार किया तो उसने अपने 2 और साथियों के साथ उसे स्कूल जाते वक्त कार में उठा लिया। फिर अज्ञात जगह पर ले जाकर

तीनों ने बारी-बारी से उसका रेप किया। फिर उसे घर के पास छोड़ दिया।

अगले दिन फिर उसी स्कूल टाइम में वह लड़की को उठा ले गए और फिर से गैंगरेप किया। इस बार उसे बेहोश हालत में ही गिफ्ट शॉप के पास फेंक गए। छात्रा ने किसी राहगीर से फोन लेकर घर पर फोन कर माता-पिता को उसे ले जाने के लिए कहा। बेहोशी और गैंगरेप की वजह से लड़की चल भी नहीं पा रही थी। इससे माता-पिता को पूरे मामले का पता चला। लड़की से पुलिस को आरोपी के फेंडशिप के लिए दी गई पर्ची मिल गई है, जिसमें आरोपी ने अपना नाम व मोबाइल नंबर दिया है। फिलहाल आरोपियों पर केस दर्ज कर सीसीटीवी फुटेज के जरिए आरोपियों की पहचान व तलाश की जा रही है।

विधानसभा परिसर के काफी करीब पहुंचे छात्र, बढ़ाई गई सुरक्षा

बैरिकेड तोड़ने पर पुलिस से झड़प

छात्रों का विधानसभा मार्च हुआ उग्र,छात्रों पर लाठीचार्ज, कई घायल,आंसू गैस के गोले दागे

बैरिकेडिंग तोड़ने की कोशिश, वाटर कैनन का इस्तेमाल

रांची (एजेंसी)। झारखंड लोक सेवा आयोग (जेपीएससी) और भर्ती परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं के खिलाफ आंदोलन कर रहे छात्रों ने सोमवार को विधानसभा घेराव का ऐलान किया है। इस दौरान छात्रों ने पुलिस की बैरिकेडिंग तोड़ दी और विधानसभा की ओर बढ़ने लगे। छात्रों को रोकने के लिए पुलिस ने हल्का बल प्रयोग करते हुए लाठी चार्ज किया। झारखंड के रांची में जेपीएससी-जेएसएससी परीक्षा में

धांधली के खिलाफ हजारों की संख्या में छात्र विधानसभा के करीब पहुंच गए हैं। वहीं पर धरना शुरू कर दिया। इस दौरान कई बार पुलिस और छात्रों के बीच झड़प की नौबत आई। दो से तीन बार लाठीचार्ज करना पड़ा। इसमें कुछ छात्रों के सिर पर चोटे आई हैं। प्रदर्शनकारियों ने जवाब में पानी की बोतल और चप्पलें फेंकीं।

रांची में जेपीएससी-जेएसएससी परीक्षा विवाद को लेकर विधानसभा घेराव कर रहे छात्रों ने पुलिस की बैरिकेडिंग को धता बताते हुए सुरक्षा घेरे को पार कर विधानसभा परिसर के काफी नजदीक तक पहुंचने का प्रयास किया। छात्रों की बड़ी संख्या में इस तरीके से आगे बढ़ने से मौके पर तनाव बढ़ गया। विधानसभा की सुरक्षा में तैनात पुलिसकर्मियों ने प्रदर्शनकारियों को रोकने की कोशिश की। अपनी मांगों को लेकर नारेबाजी करते हुए छात्र लगातार आगे बढ़ते रहे। सुरक्षा घेरे के करीब पहुंचने की लगातार कोशिश के कारण पुलिस के लिए स्थिति को काबू में रखना चुनौतीपूर्ण हो गया। मौके पर सुरक्षा बलों की अतिरिक्त तैनाती भी बढ़ा दी गई है।

हजारों की संख्या में छात्र सुबह 10 बजे ओल्ड विधानसभा के पास एकत्रित हुए और फिर विधानसभा के घेराव के लिए निकले। पुलिस ने इन्हें रोकने के लिए कंटीले तार की बैरिकेडिंग कर रखी थी। 6 लेयर की सुरक्षा व्यवस्था की गई है। सीसीटीवी कैमरों से निगरानी की जा रही है।

पुलिस ने जैसे ही वाटर कैनन का इस्तेमाल किया छात्र बैरिकेडिंग पर चढ़कर डांस करते नजर आए। कुछ छात्रों ने राष्ट्रगान गाया।

जेपीससी के पूर्व अध्यक्ष एल. खियांग्ते अरेस्ट

झारखंड में जेपीएससी और जेएसएससी भर्ती परीक्षाओं को लेकर चल रहे छात्र आंदोलन के बीच सोमवार को बड़ा एक्शन सामने आया है। झारखंड

सीआईडी ने झारखंड लोक सेवा आयोग के पूर्व चेयरमैन एल. खियांग्ते को गिरफ्तार कर लिया है। उनकी गिरफ्तारी ऐसे समय हुई है जब रांची में बड़ी संख्या में छात्र और अभ्यर्थी भर्ती परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं और विधानसभा घेराव के लिए मार्च कर रहे हैं।

सात घंटे की पूछताछ के बाद गिरफ्तारी- गिरफ्तारी से पहले सीआईडी ने एल. खियांग्ते से करीब सात घंटे तक पूछताछ की थी। रिपोर्ट के मुताबिक, वह सुबह करीब 11 बजे जांच एजेंसी के सामने पेश हुए और शाम करीब 6 बजे तक उनसे पूछताछ चली।

पीएम मोदी से मिले एनसीपी-एसपी सांसद

चर्चा में महाराष्ट्र के सूखे-प्याज से नदी प्रदूषण तक मुद्दे उठे

नई दिल्ली (एजेंसी)। एनसीपी (एसपी) की कार्यकारी अध्यक्ष सुप्रिया सुले के नेतृत्व में पार्टी के सभी आठ लोकसभा सांसदों ने सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। करीब 15 मिनट चली बैठक में महाराष्ट्र से जुड़े मुद्दों पर चर्चा हुई। सांसदों ने पीएम के सामने कौन-कौन से मुद्दे रखे?

एनसीपी (शरद पवार गुट) की कार्यकारी अध्यक्ष और सांसद सुप्रिया सुले के नेतृत्व में पार्टी के सभी आठ लोकसभा सांसदों ने सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। इस दौरान महाराष्ट्र से जुड़े अलग-अलग मुद्दों पर चर्चा हुई। बैठक करीब 15 मिनट चली। सुप्रिया सुले ने बैठक के बाद कहा कि प्रधानमंत्री के साथ महाराष्ट्र के मुद्दों पर चर्चा हुई। सूत्रों के मुताबिक, सांसदों ने अपने-अपने संसदीय क्षेत्रों से जुड़े विषय प्रधानमंत्री के सामने रखे।

क्या सांसदों ने सूखा और प्याज की कीमतों का मुद्दा उठाया?

सूत्रों के अनुसार, एनसीपी (एसपी) सांसदों ने अपने क्षेत्रों से जुड़े कई मुद्दों पर प्रधानमंत्री से चर्चा की। इनमें सूखे की स्थिति, प्याज की कीमत और चंद्रभागा नदी में प्रदूषण जैसे विषय शामिल रहे। सांसदों ने अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्रों से संबंधित समस्याओं को बैठक में रखा।

क्या बैठक में एफसीआरए संशोधन विधेयक पर भी चर्चा हुई?

करीब 15 मिनट चली इस बैठक में विवादित एफसीआरए संशोधन विधेयक का मुद्दा नहीं उठा। सुप्रिया सुले मौजूदा स्वरूप में इस विधेयक का विरोध करती रही हैं। शनिवार को उन्होंने कहा था कि विदेशी फंडिंग को हमेशा संदेह की नजर से नहीं देखा जा सकता। उन्होंने केंद्र से विधेयक को वापस लेने या इसे संयुक्त संसदीय समिति यानी जेपीसी के पास भेजने की मांग की थी।

तौलकर बेच रहे नौकरी, वाटर कैनन पर रेन डांस

झारखंड पीएससी-एसएससी में धांधली के खिलाफ हजारों की संख्या में छात्र विधानसभा घेरने पहुंचे। इस दौरान कई जगह बैरिकेडिंग तोड़ी गई, तो कहीं बैरिकेडिंग पर छात्र चढ़ गए। कंटीले तार भी छात्रों को नहीं रोक पाए, वो इसे भी पार करके आगे बढ़े। प्रदर्शन के बीच छात्र की गांधीगिरी दिखी वो एक हाथ में गुलाब और एक में तिरंगा लेकर पहुंचा। वहीं कोई स्पाइडमैन तो कोई पुष्पा राज की स्टाइल में बात करते दिखा। छात्रों ने तिरंगा से लेकर फ्लैश मार्च तक निकाला। परीक्षा की धांधली रोकने पहुंचा स्पाइडरमैन। तौल कर नौकरी बेच रहे छात्र। वाटर कैनन पर छात्रों का रेन डांस हुआ। छात्रों ने गांधीगीरी की, गुलाब लेकर पहुंचे कई छात्र।

तमिलनाडु विधानसभा में कार्यक्रमों में पहले राज्य गीत 'तमिल थाई' गाने का प्रस्ताव

डीएमके-एआईएडीएमके ने दिया समर्थन

चेन्नई (एजेंसी)। सीएम विजय ने तमिलनाडु में कार्यक्रमों की शुरुआत में राज्य गीत 'तमिल थाई वाझथु' अनिवार्य रूप से गाने का प्रस्ताव रखा। शैक्षणिक संस्थानों, सरकारी दफ्तरों और अन्य सार्वजनिक संस्थानों में इसे लागू करने के प्रस्ताव को डीएमके,एआईएडीएमके और कांग्रेस ने समर्थन दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि 'तमिल थाई वाझथु' को राज्य में सर्वोच्च प्राथमिकता मिलनी चाहिए और इसके सम्मान से समझौता नहीं होगा। यह गीत 2021 में तमिलनाडु के राज्य गीत का आधिकारिक दर्जा पा चुका है। यह प्रस्ताव केंद्रीय गृह मंत्रालय की 9 जुलाई की टिप्पणी के बाद आया है।

उप्र में गंगा-यमुना समेत 10 नदियां खतरे के निशान से ऊपर,दिल्ली में झमाझम

मप्र में नाले में बही कार, 9 की मौत,बाड़मेर-बीकानेर में सड़कें डूबी

नई दिल्ली (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के राजगढ़ में निर्माणाधीन पुल पर भारी बारिश के बीच ईको वैन नाले में बह गई। वैन में 11 लोग सवार थे। हादसे में 9 लोगों की मौत हो गई। दो तैरकर बाहर निकल आए। तेज बारिश के कारण नाले का पानी पुल के ऊपर से बह रहा था। ड्राइवर को अधूरा पुल दिखाई नहीं दिया, जिससे वैन नाले में जा गिरी।

राजस्थान के जयपुर स्थित कानोता और झालावाड़ का कालीखाड़ डैम ओवरफ्लो हो गया है। झीकनी गांव के स्कूल में पानी भर गया। यहां फंसे 30 विद्यार्थियों को गांव के लोगों की मदद से रेस्क्यू किया गया। बीकानेर के श्रीडूंगरगढ़ में रविवार रात सड़कों पर 2 से 3 फीट तक पानी भर गया। बाड़मेर में भी सड़कें लबालब हो गईं। रेलवे स्टेशन, सब्जी मंडी, हॉस्पिटल रोड समेत प्रमुख इलाकों में 2 से 4 फीट तक पानी भर गया। कई जगह दुकानों और घरों में भी पानी घुस गया।

यूपी में गंगा-यमुना समेत 10 नदियां खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। फर्रुखाबाद-बिजनौर में गंगा नदी का पानी हाईवे के ऊपर बह रहा है। कई सड़कें डूब गई हैं। 40 गांव बाढ़ की चपेट में हैं। लोग सड़कों पर टेंट लगाकर रह रहे हैं। काशी में सभी 84 घाटों को जोड़ने वाले रास्ते जलमग्न हो गए हैं। गंगा का पानी मणिकर्णिका घाट तक पहुंच गया है।

एमपी के राजगढ़ में निर्माणाधीन पुल से बही कार

राजगढ़ में निर्माणाधीन पुल से ईको कार बह गई। इसमें कुल 11 लोग सवार थे। 9 की मौत हो गई। दो लोग बाहर निकाल आए। हादसा पचोर-सारंगपुर रोड पर पड़ाना कस्बे में रविवार-सोमवार की दरमियानी रात हुआ। सूचना मिलते ही एसडीएम रोहित बम्होरे और एसडीओपी अरविंद सिंह मौके पर पहुंचे।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

नैनीताल का रोप- वे, अंग्रेजों ने 139 पहले बना ली थी योजना

जब नगर में निश्चित संख्या से अधिक गाड़ियों के चलने के लिए जगह ही नहीं है तो पार्किंग सुविधा बढ़ाने से क्या लाभ होगा? इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास नहीं है। नैनीताल नगर में क्षमता से अधिक वाहनों के रेंगने से रोकने के लिए दीर्घकालिक हल खोजने की जरूरत है। ताकि यहाँ के पर्यावरण और मौसमियत,दोनों की हिफाज़त हो सके।

(लेखक- प्रयाग पाण्डे)

अंग्रेजों के प्रकृति प्रेम एवं औपनिवेशिक शासकों की तात्कालिक आवश्यकताओं के चलते आज से करीब 183 साल पहले 1843 में कुछ यूरोपीय नागरिकों की स्वतंत्र पहल से नैनीताल नामक नगर की बसावट शुरू हुई। नैनीताल को एक आदर्श हिल स्टेशन के रूप में आबाद और विकसित करने के पीछे अंग्रेजों का प्रकृति प्रेम के साथ लालच भी था और जरूरत भी। इसमें कोई दो राय नहीं कि नैनीताल के प्रति अंग्रेजों के मन में एक विशेष आत्मीयता का भाव था। आत्मीयता के इस रिश्ते को उन्होंने नैनीताल के साथ ईमानदारी से निभाया भी।

नैनीताल को अंग्रेजों ने एक निश्चित जनसंख्या के लिए बसाया। इसी के मद्देनजर यहाँ आधारभूत सुविधाओं का ढाँचा खड़ा किया गया था। 1890 के आसपास जब नैनीताल की ग्रीष्मकालीन आबादी तकरीबन दस हजार के आसपास थी,तभी से यहाँ की भार वहन क्षमता का आकलन किए जाने की बात होने लगी थी। तत्कालीन अनेक ब्रिटिश अधिकारियों का कहना था कि नैनीताल अति मनुष्यों से भर गया है। लिहाजा यहाँ आबादी का और अधिक बोझ डाला जाना अनुचित है। अंग्रेज नैनीताल के भंगुर पर्यावरण से बखूबी वाकिफ थे। उनकी हरेक योजनाएं दीर्घकालिक नजरिए से बनती थीं। अंग्रेजों ने आज से 139 साल पहले नैनीताल को रोप -वे से जोड़ने के बारे में सोच लिया था। इसके लिए बाकायदा रोप -वे की योजना को स्वीकृति भी प्रदान कर दी गई थी।

प्रारंभिक काल में नैनीताल आने-जाने के लिए सबसे बड़ी समस्या रास्तों की थी। प्रारंभिक दौर में बरेली से बाजपुर होते हुए कालाढूंगी पहुँचा जाता था, वहाँ से निहाल नदी के किनारे- किनारे खुर्पाताल होते हुए नैनीताल। शुरुआत में यह पूरी यात्रा पैदल ही तय करनी पड़ती थी। 1847 में निहाल पुल से खुर्पाताल होते हुए नैनीताल तक अश्व मार्ग बना दिया गया था। फिर पुरुषों के लिए घोड़े और महिलाओं एवं बच्चों के लिए डांडी से यात्रा करना संभव हो गया था। 1884 में काठगोदाम तक रेल पहुँचने के बाद 1885 में काठगोदाम से ब्रेवरी तक सड़क बनाई गई। इसके बाद ब्रेवरी तक तांगे आने लगे थे। ब्रेवरी से नैनीताल आने के लिए घोड़े, डांडी और पालकी या फिर पैदल एकमात्र यातायात के साधन थे। ब्रिटिश साम्राज्य में भारत के सर्वशक्तिमान आका समझे जाने वाले अविभाजित भारत के वॉयसराय और नॉर्थ वेस्टर्न प्रोविंसेज के लेफ्टिनेंट गवर्नर से लेकर ब्रिटिश सेना और शासन के सभी आला अफ़सरान घोड़े की सवारी कर ही नैनीताल आते-जाते थे। 1893 में नैनीताल में तांगे आने लगे थे।

टांगों द्वारा यात्रा की सुविधा उपलब्ध हो जाने के बावजूद अभी भी नैनीताल में आवागमन बहुत आसान नहीं था। स्थानीय मौसमियत का आवागमन पर सीधा असर पड़ता था।बरसात और ठंड के दिनों में नैनीताल की आवाजाही बेहद जोखिम भरी, श्रमसाध्य एवं तकलीफ़देह होती थी। बरसात में भू -धंसाव की घटनाएं बढ़ जाती थीं, जिससे आवागमन प्रभावित होता था। अगर मौसम अनुकूल भी हो तो भी नैनीताल आने - जाने में बहुत समय लगता था। आवागमन की इस समस्या से निजात पाने के लिए मई,1887 में मिस्टर हन्ना नामक एक अंग्रेज ने यातायात और सामान लाने, ले जाने के लिए नैनीताल से कालाढूंगी की ओर तीन हजार फीट लंबे रोप-वे के निर्माण का सुझाव दिया। ब्रिटिश प्रशासन ने इस प्रस्ताव पर अपनी सैद्धांतिक सहमति दे दी। इस कार्य को संपादित करने के लिए 1888 के प्रारंभिक दिनों में नैनीताल रोप -वे कंपनी लिमिटेड बन गई। अगस्त,1888 में मिस्टर हन्ना ने रोप-वे के लिए 9900 रुपये की शुरुआती योजना बना ली थी। मिस्टर हन्ना की रोप-वे की इस योजना का नैनीताल नगर पालिका की सार्वजनिक निर्माण समिति ने व्यवहारिक पक्षों का अध्ययन किया। तब इस समिति में सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिशासी अभियंता भी सदस्य होते थे। योजना के सभी पक्षों की जाँच-परख के बाद नगर पालिका की सार्वजनिक निर्माण समिति ने इस योजना को स्वीकृति प्रदान कर दी। 8 अक्टूबर, 1888 को नगर पालिका कमेटी की बैठक में भी इस योजना को स्वीकृति दे दी गई। अंतिम स्वीकृति के लिए योजना को कुमाऊँ के वरिष्ठ सहायक कमिश्नर को भेज दिया गया।

प्रस्तावित रोप -वे के तार स्लीपी हॉल एवं लौंगडेल से होते हुए जाने थे। 30 नवंबर, 1888 को नगर पालिका, नैनीताल के तत्कालीन उपाध्यक्ष जे. ओकशॉट ने कुमाऊँ के वरिष्ठ सहायक आयुक्त को रोप-वे के तारों को ले जाने के लिए स्लीपी हॉल और लौंगडेल की जमीन के निश्चित हिस्सों को अनिवार्य अधिग्रहण एक्ट-×-1870 की धारा -12 के अंतर्गत 650 रुपये में अधिगृहित करने का प्रस्ताव भेजा।

इधर नगर पालिका ने मिस्टर हन्ना से कहा कि वे इस योजना का ठेका दस हजार रुपये में खुद ही ले लें। नगर पालिका ने मिस्टर हन्ना को योजना की लागत राशि का अग्रिम भुगतान करने की भी पेशकश कर दी। मिस्टर हन्ना की सहमति के बाद नगर पालिका ने रोप -वे योजना का दस हजार रुपये का टेंडर उनके नाम स्वीकृत कर दिया था। नगर पालिका का तर्क था कि दार्जिलिंग में दस हजार रुपये की लागत से एक हजार फीट लंबी रोप- वे लाइन डाली गई है, जबकि मिस्टर हन्ना उतनी ही राशि में तीन हजार फीट लंबी रोप-वे बनाने जा रहे हैं। वह भी बिना अग्रिम भुगतान के।

नगर पालिका ने रोप -वे योजना के लिए सरकार से नारायण नगर, चोरखेत और सडियाताल में जमीन माँगी। इसी दरम्यान पीडब्ल्यूडी के अधिशासी अभियंता एफ.बी.हेंसलोव ने मिस्टर हन्ना की रोप-वे योजना पर अपनी विस्तृत आख्या दी थी।

अभी यह प्रस्ताव कुमाऊँ के वरिष्ठ सहायक आयुक्त के विचाराधीन था। प्रस्ताव के अनुमोदन के बाद जमीन पर काम शुरू हो पाता कि 6 मई,1888 को हरमिटेज, स्लीपी हॉल और क्रेग कॉटेज के तत्कालीन स्वामी कर्नल डब्ल्यू. बैरन और लौंगडेल के तत्कालीन मालिक कुंवर रणजीत सिंह ने इस योजना पर अपनी आपत्ति दर्ज करा दी। कर्नल डब्ल्यू. बैरन का कहना था कि उन्होंने हाल ही में हरमिटेज को दोमंजिला किया है। प्रस्तावित रोप-वे उनके बरामदे से दृष्टिगोचर होगी,जिससे उनकी निजता भंग होने की आशंका है। कर्नल बैरन ने अपने पत्र में लिखा कि नैनीताल के बड़े फायदे के लिए उनकी संपत्ति को नुकसान पहुँचाना उचित नहीं है। इस मामले में लंबी लिखा-पढ़ी हुई। अंततः यह मामला नॉर्थ वेस्टर्न प्रोविंसेज के लेफ्टिनेंट गवर्नर तक जा पहुँचा। प्रोविंसेज के गवर्नर ने कर्नल डब्ल्यू. बैरन और कुंवर रणजीत सिंह की आपत्तियों का संज्ञान लिया। इस बारे में नॉर्थ वेस्टर्न प्रोविंसेज एंड अवध के सचिव आर. स्मीटन ने 18 मई, 1888 को कुमाऊँ के कमिश्नर को पत्र भेजा। पत्र में कहा गया कि लेफ्टिनेंट गवर्नर किसी भी नागरिक के निजी अधिकारों के हनन के पक्ष में नहीं हैं। कर्नल डब्ल्यू. बैरन और कुंवर रणजीत सिंह की आपत्तियों के मद्देनजर रोप -वे के लिए वैकल्पिक मार्ग खोजा जाए। जिसमें किसी की निजी भूमि नहीं आ रही हो या किसी को भी कम से कम नुकसान हो। इसके बाद रोप -वे की यह योजना हवा में ही अटक कर रह गई। 1947 में अंग्रेज अपने वतन लौट गए। भारत आजाद हो गया। आजादी के 79 साल बीत जाने के बावजूद नैनीताल को रोप-वे से जोड़ने की दिशा में आज तक कोई ठोस पहल नहीं हुई।

जब नैनीताल में यातायात के वैकल्पिक व्यवस्थाएं खोजने का यह मुआमला चल रहा था, तब यहाँ यांत्रिक यातायात की शुरूआत नहीं हुई थी। नैनीताल गाड़ियों की भीड़ -भाड़ और शोरगुल से निरापद था। आज जबकि नैनीताल के हरेक हिस्से में गाड़ियां बिछ-सी गईं हैं। रोज-ब-रोज गाड़ियों का तांता बढ़ता ही चला जा रहा है। नगर के पैदल रास्ते भी छोटी-बड़ी गाडियों की भीड़ से अछूते नहीं हैं। नगर की सड़कों में क्षमता से कई गुना अधिक दोपहिया और चौपहिया वाहन दौड़ रहे हैं। अनियंत्रित यातायात के चलते आम लोगों का पैदल चल पाना दुष्कर हो गया है। अंधाधुंध यांत्रिक यातायात के कारण यहाँ वायु और ध्वनि प्रदूषण में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है।

आजाद भारत के आधुनिक योजनाकार क्षमता से कई गुना अधिक गाड़ियों की इस जानलेवा भीड़ पर प्रभावी अंकुश लगाने की जुगत लगाने के बजाय इस समस्या का समाधान पार्किंग सुविधा बढ़ाने में खोज रहे हैं। जब नगर में निश्चित संख्या से अधिक गाड़ियों के चलने के लिए जगह ही नहीं है तो पार्किंग सुविधा बढ़ाने से क्या लाभ होगा? इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास नहीं है। नैनीताल नगर में क्षमता से अधिक वाहनों के रेंगने से रोकने के लिए दीर्घकालिक हल खोजने की जरूरत है। ताकि यहाँ के पर्यावरण और मौसमियत,दोनों की हिफाज़त हो सके।

(लेखक नैनीताल के निवासी हैं और प्रकृति व पहाड़ों के जानकार हैं।)

(यह लेखक के व्य क्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अ निवार्य नहीं है)

संपादकीय

बचाएं बचपन

बच्चों पर सोशल मीडिया की स्वच्छंदता से पड़ने वाले घातक प्रभावों को लेकर भारतीय अभिभावक, शिक्षक व समाजविज्ञानी लंबे अरसे से गंभीर चिंता जताते रहे हैं। यह प्रभाव कितना भयावह व घातक है, ये बात पश्चिमी देशों की सरकारों, समाज व अदालतों को अब समझ में आई है। बच्चे समय से पहले परिपक्व हो रहे हैं। किशोरों की यौन हिंसा और वयस्कों जैसे अपराधों में संलिप्तता, इसके घातक प्रभावों की बानगी है। सोशल मीडिया पर बच्चों की नजर से ऐसे वीडियो गुजरते हैं, जिसमें स्वच्छंद यौन व्यवहार होता है। कुछ लोग व कंपनियां मुनाफे के लिए ऐसे वीडियो अपलोड कर रहे हैं, जो भारतीय संस्कृति में पवित्र माने जाने वाले पारिवारिक रिश्तों, गुरु-शिष्य संबंधों और डॉक्टर मरीज के रिश्तों के वर्जित क्षेत्रों का अतिक्रमण करते नजर आते हैं। अंदाजा लगाना कठिन नहीं है कि कोरी स्लेट जैसे बालमन पर इसका कितना घातक असर पड़ता होगा? उसे पवित्र रिश्तों की दरकन और यौन-स्वच्छंद तथा गंभीर अपराध आम नजर आने लगते हैं। अमेरिका तथा कुछ अन्य विकसित देशों के स्कूलों में दना-दन गोलियां चलाते बच्चे इंटरनेट पर प्रसारित घातक सामग्री देखने से उपजी सनक की ही देन है। निस्संदेह, बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा हेतु डिजिटल दुनिया को साफ-सुथरा रखने की जरूरत है। यही वजह है कि एक अमेरिकी अदालत ने फेसबुक और इंस्टाग्राम की मातृ संस्था मेटा पर 5,390 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया है। जुर्माना ज्यादा नहीं है क्योंकि पिछले साल कंपनी ने साठ अरब डॉलर का मुनाफा कमाया। दरअसल, मेटा पर जुर्माना लगाने से अधिक महत्वपूर्ण यह है कि अदालत ने कंपनी को बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिये अपने प्लेटफॉर्म में बदलाव करने को कहा है। दरअसल, न्यू मेक्सिको की अदालत ने स्वीकारा कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के लिये घातक हैं। उल्लेखनीय है कि अमेरिका के कई राज्यों में सोशल मीडिया कंपनियों के खिलाफ मुकदमें चल रहे हैं। फ्रांस व आस्ट्रेलिया में सोशल मीडिया पर सक्रियता को लेकर बच्चों की उम्र की सीमा तय की गई है। हकीकत यह है कि कंपनी ने ये प्लेटफॉर्म अपने मुनाफे के लिये इस तरह तैयार किए हैं ताकि बच्चों को इसकी लत लग जाए। पिछले दिनों भारत सरकार ने मेटा के अधिकारियों को बुलाकर विरोध जताया था कि उसके एक प्लेटफॉर्म पर बच्चों के यौन शोषण से जुड़े विज्ञापन भारी मुनाफा कमाकर प्रसारित किए गए। अमेरिकी अदालत ने भी माना है कि मेटा के प्लेटफॉर्म बच्चों को यौन शोषण से बचाने में विफल रहे हैं। यही वजह कि कोर्ट ने लगाए गए जुर्माने की राशि का एक भाग ऐसे पीड़ितों को मुआवजे के तौर पर देने के आदेश दिए हैं। समय आ गया है कि सोशल मीडिया कंपनियों को सामाजिक जवाबदेही के लिये बाध्य किया जाए। लेकिन यह नहीं हो कि अमेरिका के बच्चों के लिये अलग कानून और विकासशील व गरीब मुल्कों के बच्चों के लिये अलग कानून हो। हमारी सरकारों को भी इन सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर गैर-कानूनी सामग्री प्रसारित करने के खिलाफ सख्त रवैया अपनाना होगा।

अमंगल हारी, करुणामयी शिवशक्ति का पावन पर्व है सावन शिवरात्रि

(लेखक- योगेश कुमार गोयल)

(सावन शिवरात्रि (11 जुलाई) पर विशेष)

भारत में सर्वाधिक महत्व जिस देव का है, वो देवाधिदेव भगवान शिव ही हैं, जो आज भी समूचे भारतवर्ष में उतने ही पूजनीय और वंदनीय हैं, जितने सदियों पहले। देशभर में भगवान शिव की पूजा-उपासना व्यापक स्तर पर होती है, इसीलिए 'शिवरात्रि' पर्व को भारत में राष्ट्रीय पर्व का दर्जा प्राप्त है। वैसे तो शिवरात्रि हर माह मनती है किन्तु इनमें से फाल्गुन महाशिवरात्रि और सावन शिवरात्रि की महत्ता सर्वाधिक है। सावन शिवरात्रि प्रायः माह की कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को मनाई जाती है, जिसे भगवान शिव के प्रति भारतीयों की आस्था की प्रतीक 'कांवड़ यात्रा' का समापन दिवस भी कहा जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार भारत में सावन शिवरात्रि का बहुत महत्व है। हिंदू पंचांग के अनुसार, सावन की शिवरात्रि सावन महीने के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाई जाती है और वर्ष यह तिथि 11 अगस्त को प्रातः 4 बजकर 43 मिनट से शुरू होकर 12 अगस्त रात्रि 01 बजकर 51 मिनट तक रहेगी। ऐसे में उदया तिथि के अनुसार, यह पर्व 11 अगस्त को ही मनाया जाएगा और इसी दिन शिवलिंग का जलाभिषेक होगा। सावन शिवरात्रि के पावन अवसर पर ही कांवड़ यात्रा का भी समापन होता है। ज्योतिषाचार्यों के अनुसार, इस साल सावन शिवरात्रि पर चतुर्ग्रही योग बन रहा है और इस दिन कर्क राशि में सूर्य, गुरु, बुध और चंद्रमा एक साथ बैठकर चतुर्ग्रही योग का निर्माण करने वाले हैं।

धार्मिक ग्रंथों में 'शिव' और 'रात्रि' के शाब्दिक अर्थ को परिभाषित करते हुए बताया गया है, जिसमें सारा जगत शयन करता है, जो विकार रहित है, वह शिव है अथवा जो अमंगल का ह्रास करते हैं, वे ही सुखमय, मंगलमय शिव हैं। जो सारे जगत को अपने अंदर लीन कर लेते हैं, वे ही करूणासागर भगवान शिव हैं। जो भगवान नित्य, सत्य, जगत आधार, विकार रहित, साक्षीस्वरूप हैं, वे ही शिव हैं। महासमुद्र रूपी शिव ही एक अखंड परम तत्व हैं, इन्हीं की अनेक विभूतियां अनेक नामों से पूजी जाती हैं, यही सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान हैं, यही व्यक्त-अव्यक्त रूप से 'सगुण ईश्वर' और 'निर्गुण ब्रह्म' कहे जाते हैं तथा यही परमात्मा, जगत आत्मा, शम्भव, मयोभव, शंकर, मयस्कर, शिव, रूद्र आदि कई नामों से संबोधित किए जाते हैं। 'रात्रि' शब्द 'रा' दानार्थक धातु से बना है अर्थात् जो सुखादि प्रदान करती है, वह 'रात्रि' है। रात्रि सदा आनन्ददायिनी होती है, अतः सबकी आश्रयदात्री होने के कारण उसकी स्तुति की गई है। इस प्रकार शिवरात्रि का अर्थ है, वह रात्रि, जो आनंद देने वाली है, जिसका शिव नाम के साथ विशेष संबंध है।

भगवान शिव को 'कालों का काल' और 'देवों का देव' अर्थात् 'महादेव' कहा गया है। देव-दानव, मानव-प्रेत, भगवान शिव इन सभी के आराध्य देव रहे हैं। 'भोले बाबा' के रूप में सर्वत्र पूजनीय भगवान शिव को समस्त देवों में अग्रणीय और पूजनीय इसलिए भी माना गया है क्योंकि वह अपने भक्तों पर बहुत जल्दी प्रसन्न होते हैं और दूध या जल की धारा, बेलपत्र व भांग की पत्तियों की भेंट से ही अपने भक्तों पर प्रसन्न हो जाते हैं तथा उनकी मनोकामना पूर्ण करते हैं। भगवान शिव को भारत की भावनात्मक एवं राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता का प्रतीक माना गया है। एक होते हुए भी शिव के नटराज, पशुपति, हरिहर, त्रिमूर्ति, मृत्युंजय, अर्द्धनारीश्वर, महाकाल, भोलेनाथ, विश्वनाथ, ओंकार, शिवलिंग, बटुक, क्षेत्रपाल, शरभ इत्यादि अनेक रूप हैं। ग्रंथों में भगवान शिव के बारे में यही उल्लेख मिलता है कि तीनों लोकों की अपार सुन्दरी और शीलवती गौरी को अर्धांगिनी बनाने वाले शिव प्रेतों और भूत-पिशाचों से घिरे रहते हैं। उनका शरीर भस्म से लिपटा रहता है, गले में सर्पों का हार शोभायमान रहता है, कंठ में विष है, जटाओं में जगत तारिणी गंगा मैया हैं और माथे में प्रलयंकर ज्वाला है। बैल (नंदी) को भगवान शिव का वाहन माना गया है और ऐसी मान्यता है कि स्वयं अमंगल रूप होने पर भी भगवान शिव अपने भक्तों को मंगल, श्री और सुख-समृद्धि प्रदान करते हैं।

कहा जाता है कि भगवान विष्णु ने भगवान शिव की अनुकम्पा प्राप्त करने के लिए उन्हें अपनी एक आंख समर्पित कर दी थी। इस बारे में कहा गया है कि भगवान विष्णु जब शिव को प्रसन्न करने के लिए 1008 कमल के फूलों से उनका अभिषेक कर रहे थे, तब आखिर में एक कमल कम रह गया। इस पर भगवान विष्णु ने तुरंत कटार से अपनी एक आंख निकाली और कम रहे कमल के स्थान पर शिव को अपनी आंख अर्पित कर दी। इससे शिव विष्णु पर इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने भगवान विष्णु को अपना दिव्य मंत्र प्रदान कर दिया--

ॐ त्रयम्बकं यजामहे
सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम।
उर्वारूकमिव बन्धनात।
मृत्योर्मुक्षीय मामृतात।।

भगवान शिव के मस्तक पर अर्द्धचंद्र शोभायमान है। इसके संबंध में कहा जाता है कि समुद्र मंथन के समय समुद्र से विष और अमृत के कलश उत्पन्न हुए थे। इस विष का प्रभाव इतना तीव्र था कि इससे समस्त सृष्टि का विनाश हो सकता था, ऐसे में भगवान शिव ने इस विष का पान कर सृष्टि को नया जीवनदान दिया जबकि अमृत का पान चन्द्रमा ने कर लिया। विषपान करने के कारण भगवान शिव का कंठ नीला पड़ गया, जिससे वे 'नीलकंठ' के नाम से जाने गए। विष के भीषण ताप के निवारण के लिए भगवान शिव ने चन्द्रमा की एक कला को अपने मस्तक पर धारण कर लिया। यही भगवान शिव का तीसरा नेत्र है और इसी कारण भगवान शिव 'चन्द्रशेखर' भी कहलाए।

(लेखक 36 वर्षों से पत्रकारिता में सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार और 'सागर से अंतरिक्ष तक- भारत की रक्षा क्रांति' सहित कई पुस्तकों के लेखक हैं)

उपयोगी हल

एक बार की बात है एक राजा था। उसका एक बड़ा-सा राज्य था।एक दिन उसे देश घूमने का विचार आया और उसने देश भ्रमण की योजना बनाई और घूमने निकल पड़ा। जब वह यात्रा से लौट कर अपने महल आया। उसने अपने मंत्रियों से पैरों में दर्द होने की शिकायत की। राजा का कहना था कि मार्ग में जो कंकड़ पत्थर थे वे मेरे पैरों में चुभ गए और इसके लिए कुछ इंतजाम करना चाहिए। कुछ देर विचार करने के बाद उसने अपने सैनिकों व मंत्रियों को आदेश दिया कि देश की संपूर्ण सड़कें चमड़े से ढंक दी जाएं। राजा का ऐसा आदेश सुनकर सब सकते में आ गए। लेकिन किसी ने भी मना करने की हिम्मत नहीं दिखाई। यह तो निश्चित ही था कि इस काम के लिए बहुत सारे रुपए की जरूरत थी। लेकिन फिर भी किसी ने कुछ नहीं कहा। कुछ देर बाद राजा के एक बुद्धिमान मंत्री ने एक युक्ति निकाली।

उसने राजा के पास जाकर डरते हुए कहा कि मैं आपको एक सुझाव देना चाहता हूँ। अगर आप इतने रुपयों को अनावश्यक रूप से बर्बाद न करना चाहें तो एक अच्छी तरकीब मेरे पास है। जिससे आपका काम भी हो जाएगा और अनावश्यक रुपयों की बर्बादी भी बच जाएगी। राजा आश्चर्यचकित था क्योंकि पहली बार किसी ने उसकी आज्ञा न मानने की बात कही थी। उसने कहा बताओ क्या सुझाव है। मंत्री ने कहा कि पूरे देश की सड़कों को चमड़े से ढंकने के बजाय आप चमड़े के एक टुकड़े का उपयोग कर अपने पैरों को ही क्यों नहीं ढंक लेते। राजा ने अचरज की दृष्टि से मंत्री को देखा और उसके सुझाव को मानते हुए अपने लिए जूता बनवाने का आदेश दे दिया।

यह कहानी हमें एक महत्वपूर्ण पाठ सिखाती है कि हमेशा ऐसे हल के बारे में सोचना चाहिए जो ज्यादा उपयोगी हो। जल्दबाजी में अप्रायोगिक हल सोचना बुद्धिमानी नहीं है। दूसरों के साथ बातचीत से भी अच्छे हल निकाले जा सकते हैं।

विचार मंथन

झारखंड का छात्र आंदोलन, सोरेन के निशाने पर भाजपा?

(लेखक- सनत जैन)

दिल्ली के छात्र आंदोलन में छात्रों के साथ केंद्रीय अर्ध सैनिक बलों और दिल्ली पुलिस द्वारा काफी बर्बरतापूर्ण कार्रवाई की गई थी। जिसमें सैकड़ो छात्र घायल हुए थे। दिल्ली के छात्र आंदोलन को सख्ती के साथ दबाने का प्रयास केन्द्र की भाजपा सरकार ने किया था। आंदोलनकारियों के ऊपर अश्रु गैस, पेलट गन से चली छर्रे वाली गोलियां, लाठी जार्ज इत्यादि का उपयोग किया गया था। जिसकी बड़ी तीव्र प्रतिक्रिया सारे देश में हुई। उसके बाद छात्र आंदोलन सड़कों पर आ गया। भारतीय जनता पार्टी ने छात्र आंदोलन में राजनीति नहीं हो, इसके लिए राजनीतिक दलों को निशाने पर लिया था। जंतर मंतर के छात्र आंदोलन में जिस तरह की राजनीति भाजपा कर रही थी, लगता है उसका जवाब झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शांति के साथ दिया है। जैसे ही झारखंड में छात्र आंदोलन शुरू हुआ। भाजपा इस आंदोलन में सक्रिय हुई। नेशनल इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जिसे गोदी मीडिया भी कहा जाता है, उसने झारखंड के छात्र आंदोलन को जिस तरह से कवरेज देना शुरू किया, इससे अंदाजा लग गया था। भाजपा झारखंड के पीछे छुपकर जेन-जी आंदोलन में घुसकर राजनीति करना चाह रही है। उसके निशाने पर हेमंत सोरेन की सरकार थी। इंडिया गठबंधन और हेमंत सोरेन ने भाजपा की इस पदचाप को पहचान लिया है। हेमंत सोरेन ने भाजपा को ही निशाने पर ले लिया, ऐसा अभी तक के हालात को देखते हुए कहा जा सकता है। झारखंड की राजधानी रांची में पिछले 17 दिनों से चल रहे छात्र आंदोलन में उन्होंने बातचीत शुरू की। छात्र नेताओं से बातचीत करके टुकड़े-टुकड़े में मांगे मानी। जांच के लिए तुरंत एक कमेटी बना दी। प्रदर्शनकारियों से बात करके उन्होंने आंदोलन को जारी रहने दिया। आंदोलन समाप्त कराने में हेमंत सोरेन सरकार ने कोई रुचि नहीं ली। सरकार से बातचीत करने के नाम पर छात्रों के प्रतिनिधिमंडल तीन गुटों में बाट दिया। जिसके कारण छात्रों का यह आंदोलन कमजोर और शांतिपूर्ण रहा। सरकार की सक्रियता के कारण यहां पर भाजपा को आंदोलन से दूर रखा। भाजपा को इस आंदोलन में सोरेन ने घुसने नहीं दिया। जिसके कारण भाजपा को अपने झंडे और डंडे के साथ अलग उपस्थिति दर्ज करानी पड़ी, यही हेमंत सोरेन चाहते थे। भाजपा छात्रों के इस आंदोलन में नहीं घुस पाए। सोरेन समर्थक छात्रों का एक गुट बन गया। दूसरा गुट इंडिया ब्लॉक के साथ में है। छात्र नेता नेहा बोरा छात्रों के आंदोलन में खुलकर भाग ले रही हैं। वह भाजपा और संघ को निशाना बना रही हैं।

छात्रों के इस आंदोलन में एक गुट देवेंद्र महतो का है, दूसरे गुट का नेतृत्व पीयूष कुमार कर रहे हैं। एक गुट का विधायक जयराम महतो नेतृत्व कर रहे हैं। वह अपनी पार्टी के इकलौते विधायक हैं। इन्होंने हाल में ही रिलायंस समूह के परिमल नाथवानी को राज्यसभा के लिए समर्थन दिया था। छात्र आंदोलन में वह किसके लिए काम कर रहे हैं, छात्र आंदोलन में यह चर्चा का विषय बना हुआ है। कुल मिलाकर सरकार ने मंत्रियों की एक कमेटी बना दी जो आंदोलनकारी छात्रों से लगातार बात करती रही है। सरकार उनकी बात मान रही है, संवाद भी हो रहा है। एक ही मांग पर बात अटकी, वह सीबीआई जांच की मांग। हेमंत सोरेन आंदोलनकारी छात्रों को यह समझा रहे हैं। सीबीआई केंद्र सरकार का तोता है, वह भाजपा के इशारे पर काम करता है। सीबीआई जांच का कोई अता-पता नहीं होता है। पश्चिम बंगाल के कोलकाता मेडिकल कॉलेज में जिस बच्ची की हत्या हुई थी, उसका मामला सीबीआई के पास है। पश्चिम बंगाल में क्या हुआ सब जानते हैं। कुल मिलाकर छात्र आंदोलन में हेमंत सोरेन की जो रणनीति थी, इसमें भाजपा को घेरा जाए। दिल्ली में भाजपाई कहते थे, उसके ठीक विपरीत झारखंड में आकर भाजपा नेता और संघ के पदाधिकारी आंदोलन को हवा दे रहे हैं। उनका यह दौहरा चरित्र सारे देश के जेन-जी और जेन- अल्फा तक जाए। दिल्ली के छात्र आंदोलन में केंद्र सरकार और भाजपा को जिम्मेदार ठहराया जाए। भाजपा छात्रों के साथ किस तरह की राजनीति करती हैं, दौहरा मापदंड अपनाती हैं। झारखंड के छात्र आंदोलन हेमंत सोरेन सरकार को दो फायदे हुए हैं, पहला उन्होंने भाजपा को छात्र आंदोलन में बेनकाब करते हुए निष्प्रभावी बना दिया। दूसरा, छात्रों को यह बता दिया है, केंद्र सरकार छात्रों के साथ किस तरह की राजनीति करती है। पिछले 12 वर्षों में शिक्षा और परीक्षाओं की बदहाली के लिए भारतीय जनता पार्टी जिम्मेदार है। हेमंत सोरेन ने जिस होशियारी के साथ आंदोलन का मुकाबला किया, वह सारे देश में चर्चा का विषय बन गया है। हेमंत सोरेन के पिता शिबू सोरेन की पहचान झारखंड में गुरू जी के नाम से है। उनका फोटो लेकर प्रदर्शनकारी छात्र आंदोलन में शामिल हुए हैं। हेमंत सोरेन ने छात्र आंदोलन का पटाछेप करने के पूर्व छात्रों को विधानसभा तक जाने का मौका भी दिया। इसी बीच झारखंड के पूर्व मुख्य सचिव और झारखंड लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष एल. खियांगते को सीआईडी द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर 14वीं जेपीएससी सिविल सेवा परीक्षा आयोजित कराने के लिए ब्लैकलिस्ट में डाली गई कंपनी को पैनल में शामिल करने सहित अन्य कई आरोप लगे हैं। इसी बीच प्रदर्शन कर रहे छात्रों ने विधानसभा का सुरक्षाघेरा तोड़ दिया, जिसके बाद पुलिस को हलका बल प्रयोग करना पड़ा है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

डीएलएफ को खुदरा कारोबार में मजबूत वृद्धि की उम्मीद

नई दिल्ली ।

देश की सबसे बड़ी रियल एस्टेट डेवलपर डीएलएफ अपने खुदरा पोर्टफोलियो को लेकर बेहद आशावादी है। कंपनी को उम्मीद है कि उपभोक्ताओं के मजबूत खर्च और उपभोग में लगातार वृद्धि के दम पर उसका खुदरा कारोबार बेहतर प्रदर्शन जारी रखेगा। डीएलएफ रिटेल की समूह की एक कार्यकारी निदेशक ने बताया कि प्रीमियम पेशकशों और बेहतर गुणवत्ता की बढ़ती मांग के कारण खरीदारों की संख्या (फुटफॉल) कोविड से पहले के स्तर से ऊपर पहुंच गई है और प्रति ग्राहक औसत बिक्री भी बढ़ रही है। उनका मानना है कि गुणवत्तापूर्ण खुदरा बिक्री की मूल मांग मजबूत बनी हुई है।` कंपनी ने हाल ही में पश्चिम दिल्ली में मिडटाउन प्लाजा जैसे हाइपरलोकल शॉपिंग सेंटर पेश किए हैं, जिनकी अवधारणा को लेकर काफी उत्साह है। बेक्टर ने कहा कि मिडटाउन प्लाजा, समिट प्लाजा और गोवा के डीएलएफ प्रोमेनेड जैसी तीन नई परियोजनाओं के साथ कंपनी का लक्ष्य अपनी आय में 20 से 22 प्रतिशत की बढ़ोतरी करना है। गुड़गांव में 20 लाख वर्ग फुट का मॉल ऑफ इंडिया भी पाइपलाइन में है। वित्त वर्ष 27 की पहली तिमाही में डीएलएफ की किराया आय में फीसदी की वृद्धि हुई और कुल पोर्टफोलियो में 95 फीसदी ऑक्यूपेंसी दर्ज की गई।

दवाओं की कीमतों पर लग सकती है नई लगाम, सरकार जांच रही ट्रेड मार्जिन का फॉर्मूला

- डीपीसीओ 2013 में बदलाव कर गैर-अनुसूचित दवाओं को दायरे में लाने का प्रस्ताव

नई दिल्ली ।

केंद्र सरकार औषधि मूल्य निर्धारण ऑर्डर (डीपीसीओ), 2013 में ट्रेड-मार्जिन युक्तिकरण (टीएमआर) को शामिल करने के प्रस्ताव पर सक्रियता से विचार कर रही है। इसका मकसद आवश्यक दवाओं की राष्ट्रीय सूची (एनएलईएम) से बाहर की गैर-अनुसूचित दवाओं की कीमतों को नियंत्रित करना है। दवा विभाग (डीओपी) ने संसदीय समिति को बताया कि इस नीतिगत निर्णय को अंतिम रूप देने की कोई निश्चित समय-सीमा नहीं है, पर इसकी सक्रिय जांच चल रही है। आंकड़ों से पता चला कि गैर-अनुसूचित दवा बाजार के 87 प्रतिशत हिस्से में औसत मार्कअप 45 प्रतिशत तक था। वहीं केवल 4 प्रतिशत हिस्से में वितरकों को 100 प्रतिशत से अधिक का भारी मार्कअप मिला। विभाग ने स्पष्ट किया कि अत्यधिक मार्जिन क्षेत्र में आम नहीं है, बल्कि यह बाजार के एक छोटे से खंड तक ही सीमित है। फार्मारैक डेटा के अनुसार टैबलेट और कैप्सूल जैसे सामान्य खुराक रूपों के लिए वितरकों से खुदरा विक्रेताओं तक का औसत संयुक्त मार्कअप लगभग 43 प्रतिशत रहा। डीओपी ने यह भी बताया कि व्यापार मार्जिन दवा की खुराक, लागत, बिक्री की मात्रा और वितरण मॉडल जैसे कारकों के आधार पर भिन्न-भिन्न होते हैं।

भारतीय इस्पात क्षेत्र में आई क्रांति, उदारीकरण ने बदली तस्वीर

- 1991-92 में इस्पात मंत्रालय की रिपोर्ट से शुरू हुआ बदलाव का दौर

नई दिल्ली ।

भारत के इस्पात क्षेत्र ने 1991-92 में एक नए युग में प्रवेश किया, जब सरकार ने इसे लाइसेंसिंग और मूल्य नियंत्रण से मुक्त कर दिया। इस्पात मंत्रालय की उस वर्ष की रिपोर्ट ने घोषणा की कि इस्पात उत्पादन अब केवल सार्वजनिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहेगा, जिसने जुलाई 1991 की नई औद्योगिक नीति के तहत उद्योग को निजी भागीदारी के लिए खोल दिया। इस्पात पहला प्रमुख क्षेत्र था जिसे लाइसेंस की शर्त से मुक्त किया गया। अब क्षमता बढ़ाने के लिए लाइसेंस की आवश्यकता समाप्त हो गई, केवल स्थान संबंधी कुछ पाबंदियां रहीं। 1 जनवरी, 1992 से सरकार ने कीमत और वितरण पर भी नियंत्रण खत्म कर दिए, जिससे सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों की कंपनियों को सख्त नियम-कायदों से आजादी मिली। इन सुधारों ने विदेशी निवेश के रास्ते खोले और कच्चे माल तथा उपकरणों के आयात संबंधी बाधाएं कम कीं। परिणामस्वरूप, कभी सनसेट इंडस्ट्री कहे जाने वाले इस उद्योग का कायापलट हो गया। स्वतंत्रता के बाद सार्वजनिक क्षेत्र के प्रभुत्व वाले इस उद्योग की कमान अब निजी कंपनियों के हाथों में आ गई, जिसने अगले तीन दशकों में तीव्र आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा दिया। उदारीकरण से पहले 1990-91 में देश के 1.32 करोड़ टन इस्पात उत्पादन में सार्वजनिक क्षेत्र की हिस्सेदारी 46 फीसदी थी, जबकि टाटा स्टील एकमात्र एकीकृत निजी उत्पादक था।

शेयर बाजार हल्की बढ़त के साथ बंद

सेंसेक्स 43, निफ्टी 13 अंक ऊपर आया

मुम्बई ।

भारतीय शेयर बाजार सोमवार को हल्की बढ़त पर बंद हुआ। सप्ताह के पहले ही कारोबार दिन दुनिया भर से मिले कमजोर संकेतों से बाजार पर दबाव बना रहा। अमेरिका और ईरान के बीच समझौते को लेकर संशय के कारण भी बाजार धारणा कमजोर हुई। इसी कारण आज दिनर भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 43.27 अंक बढ़कर 78,542.44 पर पहुंच गया। वहीं 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी भी 13.15 अंक ऊपर आकर 24,583.80 पर बंद हुआ। व्यापक बाजार में निफ्टी मिडकैप में बढ़ोतरी दर्ज की गई, जबकि निफ्टी स्मॉलकैप में गिरावट रही। सेक्टरवार देखें तो निफ्टी पीएसयू बैंक में गिरावट आई और यह सबसे खराब प्रदर्शन करने वाला सेक्टर बनकर उभरा जबकि निफ्टी फार्मा और निफ्टी एफएमसीजी का प्रदर्शन भी निराशाजनक रहा। वहीं, निफ्टी रियल्टी ने अच्छा प्रदर्शन किया। निफ्टी50 इंडेक्स में टाइटन, टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स, बजाज फाइनेंस, श्रीराम फाइनेंस, ग्रासिम और टाटा स्टील के शेयरों में सबसे ज्यादा तेजी रही जबकि एसबीआई, इटरनल, आईटीसी, डॉ. रेड्डीज लैबोरेटरीज, टीसीएस, विप्रो और कोल इंडिया के शेयरों में गिरावट आई।

आज के कारोबार में सेंसेक्स के 30 शेयरों का प्रदर्शन मिला-जुला रहा। सबसे ज्यादा तेजी टाइटन, बाजाज फाइनेंस , बाजाज फिनसर्व , टाटा स्टील और एशियन पैंटस के शेयरों में रही। दूसरे और एसबआईएन , एनटीपीसी , आईटीसी और टेक महिंद्रा के शेयरों में गिरावट रही।

वहीं इससे पहले आज सुबह शुरुआती कारोबार के दौरान हल्की तेजी देखने को मिली। सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सीमित बढ़त के साथ कारोबार कर रहे थे। शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स 177.81 अंक बढ़कर 78,676 अंक के इंट्राडे हाई पर पहुंच गया। वहीं निफ्टी करीब 50 अंक की बढ़त के साथ 24,620 अंक के स्तर पर पहुंच गया। ।कमजोर मानसून बाजार के लिए एक चिंता का विषय बना हुआ है।

रुपया गिरावट पर बंद

मुंबई ।

अमेरिकी डॉलर के मुकाबले सोमवार को रुपया 13 पैसे की गिरावट के साथ ही 95.31 पर बंद हुआ। आज सुबह शुरुआती कारोबार में रुपया सोमवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले आठ पैसे टूटकर 95.25 पर आ गया। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने कहा कि विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) के निवेश और देश के विदेशी मुद्रा भंडार में बढ़ोतरी से रुपये में अधिक गिरावट पर अंकुश लगा। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 95.18 प्रति डॉलर पर खुला और बाद में फिसलकर 95.25 प्रति डॉलर पर आ गया। यह पिछले बंद भाव से आठ पैसे की गिरावट दिखाता है। रुपया शुक्रवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले पांच पैसे की बढ़त के साथ 95.17 पर बंद हुआ था। इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की मजबूती को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.17 फीसदी बढ़कर 99.70 पर पहुंच गया।

चीन में महंगाई रिकॉर्ड निचले स्तर पर, जुलाई में घटकर 0.5 फीसदी

- कमजोर मांग और ऊर्जा लागत में कमी प्रमुख कारण

नई दिल्ली ।

चीन में महंगाई की रफ्तार जुलाई 2026 में उम्मीद से कहीं ज्यादा धीमी पड़ गई है।

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) घटकर 0.5 फीसदी रह गया, जो जून में 1 फीसदी था और बाजार की उम्मीद (0.8 फीसदी) से भी कम रहा। जनवरी के बाद यह सबसे निचला स्तर है।

फैक्ट्रियों के स्तर पर भी कीमतों की बढ़ोतरी धीमी हुई है, जो कमजोर मांग का स्पष्ट संकेत देती है। इस गिरावट की मुख्य वजह कमजोर उपभोक्ता मांग है, क्योंकि लोग अभी खुलकर खर्च नहीं कर रहे। वैश्विक ऊर्जा कीमतों में नरमी ने भी दबाव कम किया है। जुलाई में खाने-पीने की चीजें 1.5 फीसदी सस्ती हुईं, यह लगातार चौथा महीना है जब इनमें गिरावट आई है। खासतौर पर पोर्क की अधिक आपूर्ति और कम खरीदारी ने कीमतों पर दबाव डाला। ट्रांसपोर्ट से जुड़ी महंगाई भी जून के 4.1 फीसदी से गिरकर 0.4 फीसदी रह गई। हालांकि, इलाज और स्वास्थ्य सेवाओं की महंगाई बढ़कर 2.9 फीसदी हो गई।

फैक्ट्रियों के स्तर पर भी कीमतें धीमी बढ़ी हैं। फैक्ट्री से निकलने वाले सामान की कीमतें सालाना आधार पर 3.5 फीसदी बढ़ीं, जो जून में 4.1 फीसदी थी। मासिक आधार पर भी उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतें 0.1 फीसदी और फैक्ट्री से निकलने वाले सामान की कीमतें 0.7 फीसदी कम हुईं। यह समग्र आर्थिक सुस्ती का संकेत देता है।

सीएनएच इंडिया की ट्रैक्टर बिक्री 42 प्रतिशत बढ़ी,उत्पादन क्षमता बढ़ाएगी कंपनी

– 2028 तक उत्पादन 1.2 लाख इकाई पहुंचाने का लक्ष्य

नई दिल्ली।

कृषि उपकरण विनिर्माता सीएनएच की भारतीय इकाई ने वर्ष 2026 की पहली छमाही में घरेलू बाजार में रिकॉर्ड 30,248 ट्रैक्टर बेचकर 42 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की और अपनी बाजार हिस्सेदारी को अब तक के उच्चतम स्तर पर पहुंचाया। कंपनी ने बढ़ती मांग और भविष्य की जरूरतों को देखते हुए ग्रेटर नोएडा में एक चौथे विनिर्माण संयंत्र की स्थापना की भी घोषणा की है, जिससे इसकी वार्षिक उत्पादन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। सीएनएच इंडिया के एक प्रमुख अे धिकारी बताया कि जनवरी-जून 2026 में कंपनी की घरेलू ट्रैक्टर बिक्री 42 प्रतिशत बढ़कर 30,248 इकाई रही, जो उद्योग की 25 प्रतिशत वृद्धि से कहीं अधिक है।

इस दौरान निर्यात भी 20 प्रतिशत बढ़कर 6,666 वाहन हो गया, हालांकि अमेरिकी शुल्क से शुरुआत में कुछ बाधा आई थी। उन्होंने बेहतर प्रदर्शन का श्रेय प्रौद्योगिकी आधारित उत्पादों, डीलर नेटवर्क विस्तार और वित्तीय सेवा इकाई सीएनएच कैपिटल के सहयोग को दिया। जीएसटी कटौती और अनुकूल मानसून ने पहली तिमाही में बिक्री को गति दी, और पूरे वर्ष मांग अच्छी रहने की उम्मीद है।

कंपनी ग्रेटर नोएडा में अपने मौजूदा संयंत्र के पास यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (येडा) से आवंटित 100 एकड़ भूमि पर चौथा विनिर्माण संयंत्र स्थापित करेगी। 2028 की शुरुआत में चालू होने वाला यह संयंत्र कंपनी की वार्षिक ट्रैक्टर उत्पादन क्षमता को मौजूदा लगभग 70,000 वाहन से बढ़ाकर करीब 1.20 लाख वाहन कर देगा। सीएनएच इंडिया 2028 की दूसरी छमाही में 25-30 हॉर्सपावर श्रेणी का नया कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर भी पेश करेगी, जिसे घरेलू और वैश्विक बाजारों में उतारा जाएगा। वर्तमान में कंपनी की बाजार हिस्सेदारी लगभग 4.5 प्रतिशत है।

डीएलएफ का पेंटहाउस 271 करोड़ में बिका

– गुरुग्राम की द डहलियाज परियोजना में उद्यमी ने खरीदा

नई दिल्ली ।

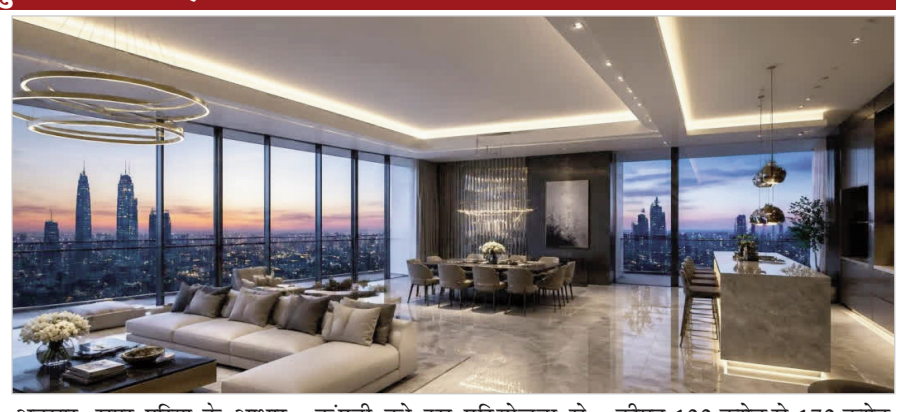

रियल एस्टेट क्षेत्र की प्रमुख कंपनी डीएलएफ लिमिटेड ने गुरुग्राम स्थित अपनी आगामी लक्जरी आवासीय परियोजना द डहलियाज में 271 करोड़ रुपये में एक पेंटहाउस बेचा है। सूत्रों के मुताबिक, यह सौदा देश के सबसे महंगे रियल एस्टेट सौदों में से एक है, जिसने प्रति वर्ग फुट कीमत के नए रिकॉर्ड स्थापित किए हैं। यह पेंटहाउस उद्यमी मानव सरदाना को बेचा गया है। डीएलएफ ने अक्टूबर 2024 में 17 एकड़ में फैली द डहलियाज परियोजना शुरू की थी, जिसमें 420 अपार्टमेंट और पेंटहाउस हैं। सूत्रों के अनुसार, सुपर एरिया के आधार पर यह पेंटहाउस 1.58 लाख रुपये प्रति वर्ग फुट की दर से बिका, जबकि कारपेट एरिया के हिसाब से कीमत करीब 2.6 लाख रुपये प्रति वर्ग फुट बैठती है। कंपनी को इस परियोजना से 40,000 करोड़ रुपये से अधिक का राजस्व मिलने की उम्मीद है। अब तक इसकी 65 प्रतिशत से अधिक इकाइयां बिक चुकी हैं। इस परियोजना में अपार्टमेंट की कीमत 100 करोड़ से 170 करोड़ रुपये के बीच है।

पेंटहाउस की कीमत इससे भी अधिक है। डीएलएफ ने इस बिक्री पर टिप्पणी करने से इनकार कर दिया है।

श्वेता आर्या बनीं महिंद्रा समूह की मुख्य रणनीति अधिकारी

मुंबई ।

महिंद्रा ग्रुप ने श्वेता आर्या को अपना नया ग्रुप मुख्य रणनीति अधिकारी नियुक्त करने की घोषणा की है।

इस भूमिका में आर्या समूह रणनीति कार्यालय का नेतृत्व करेंगी।

उनका मुख्य कार्य कंपनी के सभी व्यवसायों के साथ मिलकर नए विकास के अवसर खोजना और महिंद्रा को दीर्घकालिक रणनीतिक लाभ दिलाना होगा। वह सीधे महिंद्रा समूह के सीईओ और प्रबंध निदेशक अनीश शाह को रिपोर्ट करेंगी और समूह कार्यकारी बोर्ड का भी हिस्सा होंगी। महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड के वरिष्ठ प्रबंधन में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होगी। इससे पहले, श्वेता आर्या कमिंस इंडिया में प्रबंध निदेशक के तौर पर कार्यरत थीं।

आईएफसी एनडीआर स्मार्ट स्पेसेज में करेगी 225 करोड़ निवेश

– इक्विटी निवेश से टियर-2 और टियर-3 शहरों में बनेंगे आधुनिक वेयरहाउस

मुंबई ।

अंतरराष्ट्रीय वित्त निगम (आईएफसी) ने भारत में लॉजिस्टिक्स और वेयरहाउसिंग क्षेत्र को मजबूती देने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। सोमवार को आईएफसी ने एनडीआर स्मार्ट स्पेसेज प्राइवेट लिमिटेड में 225 करोड़ रुपये (लगभग 2.3 करोड़ डॉलर) के इक्विटी निवेश की घोषणा की। इस साझेदारी का प्राथमिक लक्ष्य देश के टियर-2 और टियर-3 शहरों में आधुनिक अवसंरचना का विकास करना है, जिससे आर्थिक गतिविधियों और रोजगार के अवसरों में वृद्धि हो सके। एनडीआर स्मार्ट स्पेसेज, एनडीआर समूह द्वारा स्थापित एक नया मंच है, जो इस निवेश का उपयोग 14 शहरों में लगभग दो करोड़ वर्ग फुट ग्रेड-ए वेयरहाउस और लॉजिस्टिक्स अवसंरचना विकसित करने के लिए करेगा। इन परियोजनाओं में सामान्य वेयरहाउस और कोल्ड स्टोरेज दोनों शामिल होंगे, विशेषकर महाराष्ट्र, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। आईएफसी के अनुसार यह पहल छोटे शहरों में आधुनिक लॉजिस्टिक्स की कमी को दूर करेगी, विनिर्माण गतिविधियों को बढ़ावा देगी और संगठित क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण रोजगार के अवसर पैदा करेगी। आईएफसी के शलभ टंडन ने कहा कि इससे किसानों को बाजारों से बेहतर ढंग से जोड़ने और फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करने में भी मदद मिलेगी, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बल मिलेगा।

एयर इंडिया विमान दुर्घटना में पायलट पर साइकोएक्टिव पदार्थ के सेवन का संदेह

- फुकेत-दिल्ली उड़ान में अचानक 300 फीट ऊंचाई घटने के बाद हुई थी घटना

नई दिल्ली ।

नागर विमानन मंत्रालय ने हाल ही में पुष्टि की कि फुकेत से दिल्ली आ रही एयर इंडिया की एक उड़ान के मुख्य पायलट को साइकोएक्टिव पदार्थ के लिए शुरुआती जांच में संदिग्ध पाया गया है। यह घटना 4 अगस्त को हुई थी, जब हवा में विमान की ऊंचाई अचानक 300 फीट घट गई थी। मंत्रालय अब अंतिम परीक्षण रिपोर्ट का इंतजार कर रहा है, जिसके बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। एयरबस ए320 उड़ान (संख्या एआई2379) फुकेत से दिल्ली आते समय हवा में लगभग 300 फीट नीचे आ गई थी। हालांकि, बाद में विमान को नियंत्रित कर दिल्ली में सुरक्षित उतार लिया गया। इस घटना के दौरान तीन नवजात शिशुओं सहित 137 यात्री और आठ चालक दल के सदस्य विमान में सवार थे, जिनमें से कुछ यात्रियों और चालक दल के सदस्यों को चोटें आई थीं। मंत्रालय ने बताया कि मानक संचालन प्रक्रियाओं के तहत घटना के बाद उड़ान चालक दल के दोनों सदस्यों की अनिवार्य साइकोएक्टिव पदार्थ की जांच की गई। मुख्य पायलट का नमूना अंतिम पुष्टि के लिए एक तय प्रयोगशाला में भेजा गया है, जिसकी अंतिम रिपोर्ट का इंतजार है। इस बीच नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने जांच पूरी होने तक दोनों पायलटों को ड्यूटी से हटा दिया है। इस घटना को गंभीर श्रेणी में रखा गया है और इसकी जांच विमान दुर्घटना जांच ब्यूरो (एएआईबी) कर रहा है। जांच के निष्कर्षों और अंतिम रिपोर्ट के नतीजों के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

सोने के समीकरण बदले! युद्ध नहीं, अब महंगाई और ब्याज दरें तय करेंगी दिशा

- निवेशक अब संघर्षों को आंक रहे हैं महंगाई और मौद्रिक नीति के असर से

नई दिल्ली ।

सोने की कीमतों और भू-राजनीतिक संघर्षों के बीच चला आ रहा पारंपरिक संबंध अब बदल रहा है। एक नई रिपोर्ट के अनुसार अब मुद्रास्फीति, ब्याज दरें और मौद्रिक नीति जैसे कारक सर्राफा कीमतों को प्रभावित करने में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

रिपोर्ट बताती है कि चालू वर्ष की पहली छमाही में यह स्पष्ट हो गया कि केवल भू-राजनीतिक जोखिम सोने में तेजी लाने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। निवेशक अब संघर्षों का आकलन इस आधार पर कर रहे हैं कि उनका मुद्रास्फीति और ब्याज दरों पर क्या प्रभाव पड़ता है। एक जिंस शोध प्रमुख के अनुसार, युद्ध और सोने के बीच संबंध अब पहले की तुलना में अधिक परिस्थितियों पर निर्भर हो गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि ऊंचे बॉन्ड प्रतिफल (यील्ड) सोने के लिए सबसे बड़ी बाधा बनकर उभरी, जिससे सुरक्षित निवेश के रूप में इसकी पारंपरिक मांग प्रभावित हुई।

वर्ष की शुरुआत में नीतिगत अनिश्चितता, केंद्रीय बैंकों की खरीदारी और अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा ब्याज दरों में कटौती की उम्मीदों से सोने की कीमतों को मजबूती मिली थी। हालांकि बाद में शुल्क वृद्धि ने उत्पादन लागत और मुद्रास्फीति की अपेक्षाओं को बढ़ाया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि शुल्क अब आर्थिक वृद्धि के लिए ही नहीं, बल्कि मुद्रास्फीति के लिए भी एक कारक बन गए हैं। इसने लंबे समय तक ऊंची ब्याज दरें बने रहने की आशंका मजबूत की, जिससे डॉलर और अमेरिकी ट्रेजरी प्रतिभूतियों की वास्तविक प्रतिफल में तेजी आई और सोने की चमक फीकी पड़ी।

अमेरिका-ईरान संघर्ष भी इसी बदलते रुख का उदाहरण है, जहां शुरुआती तेजी के बाद कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि से महंगाई की चिंता बढ़ी और सोने की कीमतें सुधर गईं। आगे चलकर मुद्रास्फीति का रुख, फेडरल रिजर्व के संकेत, वैश्विक नकदी की उपलब्धता, केंद्रीय बैंकों की खरीदारी, ईटीएफ (एक्सचेंज ट्रेडेड फंड) और सट्टा निवेश सोने एवं चांदी की कीमतों के प्रमुख चालक बने रहेंगे।

भारत में रिकॉर्ड निवेश की घोषणाएं, आईटीईएस,बिजली क्षेत्र सबसे आगे

– वित्त वर्ष 2027 की शुरुआत में 26.75 लाख करोड़ के निवेश का प्रस्ताव

नई दिल्ली ।

बैंक ऑफ बड़ौदा की एक रिपोर्ट के अनुसार वैश्विक अनिश्चितताओं के बावजूद मौजूदा वित्त वर्ष की शुरुआत से अगस्त के पहले सप्ताह तक भारत में कुल 26.75 लाख करोड़ रुपये के निवेश की घोषणाएं हुईं।

इनमें से लगभग 56 प्रतिशत (14.98 लाख करोड़ रुपये) आईटी-आधारित सेवा (आईटीईएस) क्षेत्र में प्रस्तावित है, जिसका लगभग 99 प्रतिशत हिस्सा डेटा सेंटर और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) से संबंधित है। बिजली दूसरी सबसे बड़ी श्रेणी रही, जिसमें 6.86 लाख करोड़ रुपये का निवेश प्रस्तावित है। इसमें चार परमाणु ऊर्जा कंपनियों का अनुमानित 6.5 लाख करोड़ रुपये का खर्च शामिल है। इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में लगभग 51,000 करोड़ रुपये के निवेश की घोषणाएं हुईं, जिसमें दो-तिहाई सोलर सेल और बैटरी से जुड़े हैं। अक्षय ऊर्जा, विशेषकर सौर ऊर्जा, में भी लगभग 25,000 करोड़ रुपये का निवेश होना है। बुनियादी ढांचे के विकास के कारण एल्युमीनियम और इस्पात क्षेत्रों में भी निवेश बढ़ रहा है।

हालांकि, रिपोर्ट बताती है कि निवेश की घोषणाएं अभी भी कुछ ही क्षेत्रों तक सीमित हैं और उपभोक्ता-केंद्रित उद्योगों जैसे वाहन और उपभोक्ता वस्तुओं में 2,000 करोड़ रुपये से कम का निवेश देखा गया है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

WWE इतिहास में ब्रॉक लैसनर की सबसे खतरनाक फाइट्स

बिग शो के साथ तो टूट गया था पूरा रिंग

नई दिल्ली। ड्ड्ढ्ढ के महान रेसलर ब्रॉक लैसनर ने पिछले हफ्ते समरस्लैम 2026 के बाद कंपनी को अलविदा कह दिया। मंडे नाइट रॉ के पिछले एपिसोड में ब्रॉक को ट्रिब्यूट दिया गया और उनका नाम एल्यूमिनी लिस्ट में भी डाला गया। उनके करियर का अंत जरूर हार के साथ हुआ लेकिन पिछले 26 साल के करियर में लैसनर ने कई बड़ी उपलब्धियां हासिल कीं। उनके करियर में कई ऐसे यादगार मैच भी रहे जब रिंग या तो खून से लाल रंग में तब्दील हो गया। या एक बार पूरा रिंग ही टूट गया। ब्रॉक लैसनर के करियर की ऐसी ही पांच खतरनाक फाइट्स के बारे में बात करेंगे। इसमें उनकी द अंडरटेकर, जॉन सीना, रोमन रेंस, बिग शो और कोडी रोड्स जैसे बेहतरीन रेसलर्स से हुए मुकाबलों का विवरण है। इसमें से एक मैच उनका और बिग शो का बहुत मशहूर हुआ था जब रिंग ही चारों तरफ से टूट गया था।

- **ब्रॉक लैसनर बनाम बिग शो- स्मैकडाउन, जून 2003-** 2003 में WWE का एक दौर था जब ब्रॉक लैसनर और बिग शो के बीच खतरनाक राइवलरी देखने को मिलती थी। उसी बीच जून 2003 में ब्रॉक लैसनर और बिग शो का मुकाबला एक स्मैकडाउन के शो में हुआ। WWE चैंपियनशिप के लिए हो रहे इस मुकाबले में दोनों के बीच बेहतरीन टक्कर देखने को मिली। इसी दौरान लैसनर ने रस्सी के ऊपर खड़े होकर 500 पाउंड के बिग शो को सुपरप्लेक्स दिया। जैसे दोनों रेसलर रिंग के बीच में गिरते हैं तो रिंग ही चारों तरफ से टूट गया। यह कंपनी के इतिहास में पहली बार देखने को मिला था। इसलिए यह मैच WWE में ब्रॉक लैसनर के सबसे यादगार फाइट्स में से एक है।
- **ब्रॉक लैसनर बनाम जॉन सीना- WWE E&treme Rules 2012-** ब्रॉक लैसनर ने 2012 में अपने दूसरे कार्यकाल के दौरान कंपनी में वापसी की थी। उस समय उनकी राइवलरी थी जॉन सीना के साथ दोनों के बीच एक्ट्रीम रूल्स 2012 में कांटे की टक्कर देखने को मिली। इस मैच में दोनों रेसलर खून से लथपथ थे। लैसनर ने शुरुआती क्षणों में ही अपनी कोहनी से सीना का सिर लहूलुहान कर दिया था। इस मैच में इसके बाद मेटल चेन जैसे कई खतरनाक उपकरण भी इस्तेमाल हुए।
- **ब्रॉक लैसनर बनाम द अंडरटेकर- WWE No Mercy 2002-** ब्रॉक लैसनर ने 2002 में कंपनी में डेब्यू किया था। उस वक्त उनका नाम मेन रोस्टर में आत ही चर्चा का विषय था। लैसनर ने उस समय के दिग्गज हल्क होगन को हराकर सभी को चौंकाया था। फिर उनका सामना होना था डेडमैन द अंडरटेकर के साथ। नो मर्सी 2002 में दोनों की फाइट तय हुई। इस मैच को जाल में कराया गया। मैच शुरू होने के कुछ ही देर बाद अंडरटेकर के एक प्रहार से लैसनप का माथा लहूलुहान हो गया था। फिर लैसनर ने भी अंडरटेकर पर स्टील की सीढ़ियों से प्रहार किया और वह भी खून से लथपथ हो गए।
- **ब्रॉक लैसनर बनाम रोमन रेंस- WWE WrestleMania 31, 2014-** 2014 का यह वो दौर था जब लैसनर को दोबारा वापसी करे दो साल हो चुके थे। वहीं नए स्टार रोमन रेंस को कंपनी पुश कर रही थी। उसी बीच रेसलमेनिया 31 में दोनों का मैच फाइनल हुआ। उस मुकाबले में उम्मीद के मुताबिक लैसनर ने रोमन रेंस को खूब छकाया। इस मुकाबले में दोनों के बीच कांटे की टक्कर हुई। अंत में दोनों फाइटर्स लहूलुहान थे। व

संक्षिप्त समाचार

उत्तर प्रदेश टी-20

भुवी की लखनऊ फाल्कन्स की नजर टूर्नामेंट की ट्रॉफी पर

बोले- युवाओं के लिए है बड़ा प्लेटफॉर्म

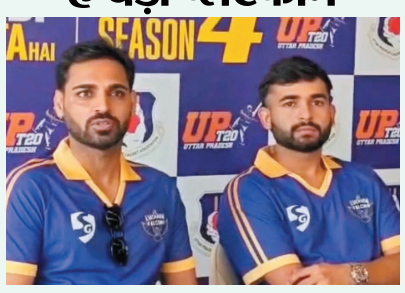

लखनऊ। यूपी टी20 लीग 2026 का आगाज 14 अगस्त से होगा। लखनऊ फाल्कन्स के कप्तान भुवनेश्वर कुमार ने लीग को युवा खिलाड़ियों के लिए बड़ा प्लेटफॉर्म बताया। उन्होंने टीम की तैयारियों और इस बार ट्रॉफी जीतने की उम्मीद भी जताई। युवा खिलाड़ी आराध्य यादव ने भी सीनियर खिलाड़ियों के साथ ड्रेसिंग रूम साझा करने को अपने करियर के लिए अहम बताया। यूपी टी20 लीग की शुरुआत 14 अगस्त 2026 से होगी। टूर्नामेंट के मुकाबले दो शहरों लखनऊ और कानपुर में खेले जाएंगे। टूर्नामेंट से पहले लखनऊ फाल्कन्स के कप्तान भुवनेश्वर कुमार ने मीडिया से बातचीत की। (फोटो सोर्स- विशेष व्यवस्था) यूपी टी20 लीग का नया सीजन 14 अगस्त से शुरू होना है। इस बार लीग के मुकाबले दो वेन्यू लखनऊ के इकाना क्रिकेट स्टेडियम और कानपुर के ग्रीनपार्क स्टेडियम में खेले जाएंगे। टूर्नामेंट के आगाज से पहले भारतीय टीम के अनुभवी तेज गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार और युवा खिलाड़ी आराध्य यादव ने लीग के महत्व और अपनी टीम 'लखनऊ फाल्कन्स' की तैयारियों पर विस्तार से चर्चा की।

यूपी टी20 लीग युवा खिलाड़ियों के लिए बेहतरीन अवसर- लखनऊ फाल्कन्स के कप्तान भुवनेश्वर कुमार ने यूपी टी20 लीग को युवा प्रतिभाओं के लिए एक बड़ा प्लेटफॉर्म बताया। भुवनेश्वर कुमार ने कहा, ''यूपी टी20 लीग युवा खिलाड़ियों के लिए बेहद शानदार अवसर है। लीग में कई इंटरनेशनल खिलाड़ी खेल रहे हैं। युवा खिलाड़ियों को उनके साथ ड्रेसिंग रूम शेयर करने का मौका मिलता है'' भुवनेश्वर कुमार ने कहा, ''खिलाड़ी अपनी योग्यता और प्रदर्शन के दम पर आगे बढ़ सकते हैं।

वैभव अर्धशतक से चूके, सार्थक रंजन ने लगाई हाफ सेंचुरी

नॉर्थ दिल्ली स्ट्राइकर्स ने न्यू दिल्ली टाइगर्स को हराया

नई दिल्ली। दिल्ली प्रीमियर लीग 2026 के 18वें मैच में सार्थक रंजन की कप्तानी वाली नॉर्थ दिल्ली स्ट्राइकर्स ने न्यू दिल्ली टाइगर्स को 7 विकेट से हरा दिया। ये नॉर्थ दिल्ली स्ट्राइकर्स की इस लीग में चौथे मैच में दूसरी जीत रही और इस टीम के फिलहाल 5 अंक हो चुके हैं। सार्थक रंजन को उनकी शानदार पारी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच भी चुना गया और वो इस सीजन में काफी अच्छा प्रदर्शन भी कर रहे हैं। नॉर्थ दिल्ली स्ट्राइकर्स और न्यू दिल्ली टाइगर्स

के बीच खेले गए मैच में नॉर्थ दिल्ली स्ट्राइकर्स ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया और इसके बाद न्यू दिल्ली टाइगर्स ने 20 ओवर में 8 विकेट पर 161 रन बनाए। नॉर्थ दिल्ली स्ट्राइकर्स को जीत के लिए 162 रन का टारगेट मिला था और इस टीम ने 19.1 ओवर में 3 विकेट पर 165 रन बनाकर मैच को जीत लिया।

वैभव अर्धशतक से चूके, सार्थक ने लगाई हाफ सेंचुरी- नॉर्थ दिल्ली स्ट्राइकर्स के लिए पारी की शुरुआत करने वैभव कांडपाल और कप्तान सार्थक रंजन मैदान पर उतरे। दोनों के बीच पहले विकेट के लिए 70 गेंदों पर 102 रन की शतकीय साझेदारी हुई, लेकिन वैभव 36 गेंदों पर 41 रन बनाकर आउट हो गए और ये साझेदारी टूट गई। वैभव ने अपनी पारी के दौरान 2 छक्के और 3 चौके भी लगाए और वो अपने अर्धशतक के करीब आकर उससे चूक गए।

अश्मिता ने जीता कोरिया मास्टर्स

बैडमिंटन फाइनल में चीन की खिलाड़ी को हराया; एक हफ्ते में भारत का दूसरा BWF खिताब

नई दिल्ली। भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी अश्मिता चालिहा ने रविवार को कोरिया मास्टर्स सुपर 300 महिला सिंगल्स का खिताब जीता। 26 साल की अश्मिता ने 53 मिनट चले फाइनल में चीन की चौथी सीड हान कियान शी को हराया। उन्होंने 14-21, 21-14, 21-14 से जीत दर्ज कर अपना पहला BWF वर्ल्ड टूर खिताब जीता। भारत ने लगातार दूसरा BWF वर्ल्ड टूर फाइनल का खिताब अपने नाम किया। इससे पहले तन्वी शर्मा ने 2 अगस्त को ताइपे ओपन जीता था।

पहले गेम में हान ने बनाई बढ़त

अश्मिता ने मैच की शुरुआत में 3-0 की बढ़त बनाई। वे शुरुआती दौर में 9-5 से आगे थीं। इसके बाद हान ने वापसी की और दोनों खिलाड़ी 11-11 की बराबरी पर पहुंच गईं। चीनी खिलाड़ी ने लगातार अंक जुटाकर खेल पर कंट्रोल बनाया। हान ने पहला गेम जीतकर बढ़त हासिल की।

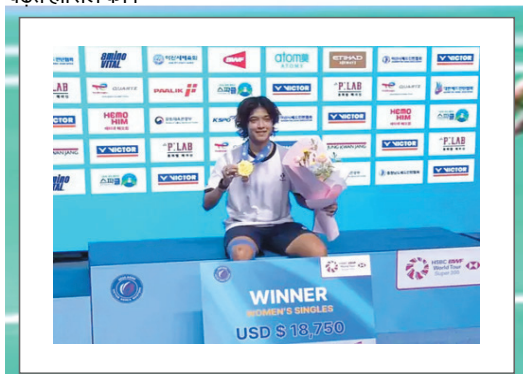

दूसरे गेम में अश्मिता की वापसी

अश्मिता ने दूसरे गेम में आक्रामक खेल दिखाया। उन्होंने स्मैश से हान पर दबाव बनाया और तेज डिफेंसिव रिटर्न से 6-6 के बाद बढ़त बना ली। ब्रेक के समय अश्मिता 11-8 से आगे थीं। इसके बाद भी उन्होंने रैलियों पर नियंत्रण बनाए रखा। हान अंतर कम नहीं कर सकीं और अश्मिता 17-10 से आगे हो गईं। भारतीय खिलाड़ी ने एक और तेज अटैकिंग शॉट के साथ गेम 21-14 से जीतकर मुकाबला बराबर कर दिया।

तीसरे गेम में पिछड़ने के बाद की वापसी

अंतिम गेम की शुरुआत में दोनों खिलाड़ियों के बीच कड़ा मुकाबला रहा। अश्मिता ने 5-2 की बढ़त बनाई, लेकिन मिड-गेम ब्रेक तक हान 11-9 से आगे निकल गईं। अश्मिता ने वापसी करते हुए लाइन के किनारे शॉट लगाकर 12-11 की बढ़त बनाई। इसके बाद अश्मिता गेम में लगातार आगे रहीं। उन्होंने हान के कोर्ट में खाली जगहों का फायदा उठाया और स्कोर 19-14 कर दिया। हान का रिटर्न बाहर जाने पर अश्मिता को आखिरी पॉइंट मिला। इसके साथ ही उन्होंने चैंपियनशिप अपने नाम की।

2024 में अश्मिता के घुटने की सर्जरी हुई थी

अश्मिता को 2024 में कोरिया ओपन के दौरान दाएं घुटने में मेडियल मेनिस्कस में चोट लगी थी। इसके बाद उनकी सर्जरी हुई और लंबे समय तक रिहैबिलिटेशन किया। वह अगले साल फरवरी में वापस लौटीं और 14 टूर्नामेंट में खेलीं। उन्होंने ब्ब्स्न टूर पर चाइना मास्टर्स और मलेशिया मास्टर्स में लगातार क्वार्टरफाइनल खेले। इसके बाद मकाऊ ओपन में सेमीफाइनल तक पहुंचीं।

सरफराज खान 2 साल बाद भारतीय टीम में शामिल

- *चोटिल साई सुदर्शन की जगह मौका मिला, गॉल टेस्ट से पहले टीम से जुड़ेंगे*

नई दिल्ली। बैटर सरफराज खान को दो साल बाद टीम इंडिया में जगह मिली है। उन्हें श्रीलंका दौर पर चोटिल साई सुदर्शन की जगह शामिल किया गया। BCCI ने रविवार शाम को इसकी जानकारी दी। भारतीय टीम श्रीलंका के खिलाफ गॉल में 15 अगस्त से पहला टेस्ट खेलेगी। सरफराज ने पिछला टेस्ट 2024 में वानखेड़े स्टेडियम में न्यूजीलैंड के खिलाफ खेला था। वे अब तक 6 टेस्ट मैच ही खेल सके हैं।

- **सुदर्शन की रिकवरी पर अपडेट भी दिया-** ब्ब्ष्ष्ह्व ने साई सुदर्शन की रिकवरी पर अपडेट भी दिया। साई सुदर्शन बेंगलुरु स्थित ब्ब्ष्ष्ह्व सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (ष्टह्रश्व) में रिहैबिलिटेशन कर रहे हैं। वे अच्छी तरह ठीक हो रहे हैं। मेडिकल टीम उनकी रिकवरी पर लगातार नजर बनाए हुए है। साई सुदर्शन को पिछले महीने श्रीलंका-ए के खिलाफ दूसरे अनऑफिशियल टेस्ट के दौरान पैर के अंगूठे में चोट लगी थी। उन्होंने उसी दौरे पर लगातार दो शतक जड़कर शानदार फॉर्म दिखाई थी।
- **प्लेयर्स की चोटों से जूझ रही है टीम इंडिया-** श्रीलंका दौरे से पहले ही भारतीय टीम कई चोटों से परेशान है। तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह घुटने की चोट के कारण पूरी टेस्ट सीरीज से बाहर हो चुके हैं।
- वॉशिंगटन सुंदर हैमस्ट्रिंग इंजरी के चलते पहला टेस्ट नहीं खेलेंगे। हर्षित राणा (हैमस्ट्रिंग), नीतीश कुमार रेड्डी (क्वाड्रिसेप्स) और आकाश दीप चोट) भी उपलब्ध नहीं हैं।
- **नेट्स के दौरान टेस्ट कप्तान शुभमन गिल की दाएं हाथ की -** नामिका उंगली में चोट लगी थी। वे एहतियात के तौर पर वॉर्म-अप मैच के शुरुआती 2 दिन खेलने नहीं उतरे। हालांकि, तीसरे दिन वे यशस्वी जायसवाल के साथ ओपन करने उतरे और 44 रन बनाए।

भारत की अपडेटेड टीम

शुभमन गिल (कप्तान), केएल राहुल (उपकप्तान), यशस्वी जायसवाल, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), रवींद्र जडेजा, कुलदीप यादव, मानव सुथार, मोहम्मद सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा, गुरनूर बरार, देवदत्त पडिक्कल, सारांश जैन, औकिब नबी और सरफराज खान।

'खिलाड़ी मशीन नहीं'

फिट होने में समय लगता है- लक्ष्मण: कहा- इंजरी प्लेयर्स के करियर का हिस्सा, किसी को दोषी नहीं ठहरा सकते

नई दिल्ली। पूर्व क्रिकेटर वीवीएस लक्ष्मण ने खिलाड़ियों के धीरे फिट होने में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (ष्टश्व) को दोषी मानने से इनकार किया है। उन्होंने कहा कि क्रिकेटर मशीन नहीं है। ऐसा नहीं है कि हर बार वे जल्दी चोट से उबर जाएंगे। लक्ष्मण ब्ब्ष्ष्ह्व के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के प्रमुख हैं। उन्होंने रविवार को मीडिया से बातचीत में कहा कि ष्टश्व और पुरुष-महिला दोनों टीमों के मैनेजमेंट के बीच शानदार तालमेल है। लक्ष्मण का बयान ऐसे टाइम पर आया है, जब देशभर में खिलाड़ियों के चोटिल होने पर सवाल उठ रहे हैं।

लक्ष्मण ने कहा- ष्टश्व सिर्फ रिहैब सेंटर नहीं- लक्ष्मण ने कहा- 'ष्टश्व सिर्फ रिहैब सेंटर नहीं है। क्रिकेटर्स को बेहतर बनाने में इसकी बड़ी भूमिका है। इसलिए चोट के लिए दोष शब्द का इस्तेमाल नहीं करना चाहते, क्योंकि इससे किसी को बलि का बकरा बनाया जाता है।' लक्ष्मण ने कहा कि फिटनेस के नियम कड़े हैं। साथ ही सभी खिलाड़ियों के शरीर का नेचर भी अलग है। इस वजह से कोई खिलाड़ी तय समयसीमा में पूरी तरह फिट नहीं हो पाता। उन्होंने बताया कि चोट का पता होने से लेकर खिलाड़ी के फिट होकर जाने तक उसकी मॉनिटरिंग होती है। इसी के आधार पर उसका वर्कलोड बढ़ाया जाता है।

लक्ष्मण बोले- चोट चिंता की वजह नहीं है

लक्ष्मण ने बड़ी संख्या में खिलाड़ियों के लगातार चोटिल होने पर कहा- 'मुझे नहीं लगता कि यह चिंता का कारण है। जब कोई खिलाड़ी हाई लेवल पर खेलता है, तो उससे 100% से ज्यादा देने की उम्मीद होती है।' उन्होंने कहा- खिलाड़ियों की चोट को देखने का बाहरी दुनिया का नजरिया बदलना चाहिए। ष्टश्व के फिटनेस स्टाफ एड्रियन, निक और कमलेश काम कर रहे हैं।

सीरीज से 3-4 हफ्ते पहले सिलेक्शन मीटिंग होती है

ब्ब्ष्ष्ह्व सचिव देवजीत सैकिया ने सीरीज से पहले टीम का सिलेक्शन प्रोसेस समझाया। उन्होंने कहा कि टीम के रवाना होने से कम से कम 3 से 4 हफ्ते पहले मीटिंग होती है। इसलिए उस समय खिलाड़ी की सही स्थिति पता नहीं होती। इसी वजह से उसके नाम के आगे स्टार लगाया जाता है और स्क्वाड में रखा जाता है।

यशस्वी ने डक पर आउट होने के बाद की शानदार वापसी

श्रीलंका 11 के खिलाफ 2 छक्के 9 चौकों के साथ लगाया अर्धशतक

नई दिल्ली। भारतीय टेस्ट टीम के ओपनर बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल दो मैचों की टेस्ट सीरीज से ठीक पहले लय में आ गए हैं और ये टीम इंडिया के लिए काफी सुखद खबर है। श्रीलंका इलेवन के खिलाफ तीन दिवसीय प्रैक्टिस टेस्ट मैच में यशस्वी जायसवाल पहली पारी में डक पर आउट हो गए थे, लेकिन दूसरी पारी में उन्होंने कमाल की वापसी की और टीम के लिए अर्धशतकीय पारी खेलकर रिटायर आउट हुए।

यशस्वी जायसवाल ने लगाया अर्धशतक- पहली पारी में असफल रहने के बाद यशस्वी ने कमाल की वापसी दूसरी पारी में की और उन्होंने काफी आत्मविश्वास के साथ बल्लेबाजी की।

सिराज ने तीन छक्के लगाकर भारत को जिताया

वॉर्मअप में श्रीलंका को 6 विकेट से हराया; चोट से रिकवर हुए गिल के 44 रन

नई दिल्ली। भारत ने टेस्ट सीरीज से पहले वॉर्मअप मैच में श्रीलंका-11 को 6 विकेट से हरा दिया। मोहम्मद सिराज ने आखिरी ओवर में लगातार तीन छक्के लगाकर टीम इंडिया को जीत दिलाई। रविवार को मैच के आखिरी दिन भारत को जीत के लिए 16 रन चाहिए थे।

ऐसे में सिराज ने केशरा नुवंथा की शुरुआती तीन बॉल पर लगातार तीन छक्के लगाए। उंगली की चोट से लौट रहे कप्तान शुभमन गिल ने 44 रन की पारी खेली। उन्होंने यशस्वी जायसवाल के साथ 105 रन की साझेदारी की। कोलंबो में भारत को 207 रन का टारगेट मिला था। उसने दिन का खेल शुरु होने से पहले ही पहली पारी 357/6 के स्कोर पर घोषित की। श्रीलंका XI ने अपनी दूसरी पारी 200/6 के स्कोर पर घोषित की। श्रीलंका-XI ने पहली पारी में 363/8 का स्कोर बनाया था।

भारत मैच जीतने के बाद भी क्यों खेला?

भारत के मैच जीतने के बाद भी खेल जारी रहा। अंपायर्स ने केशरा नुवंथा का ओवर पूरा कराया। सिराज ने ओवर की बची तीनों गेंद खेलीं। प्रैक्टिस मैच का रिजल्ट सीरीज या टूर्नामेंट की जीत-हार में नहीं जुड़ता। मैच का मकसद खिलाड़ियों को मैदान, पिच के लिहाज से तैयार कराना है। इसमें टीम अपनी प्लेइंग-11 में स्क्वाड में शामिल सभी 15 खिलाड़ियों को खिला सकती है। अगर टीम चाहे तो मैच जीतने के बाद भी वह पूरे तय ओवर तक बैटिंग खेल सकती है।

नेट सेशन के दौरान गिल को चोट लगी थी- वॉर्मअप मैच शुरू होने से एक दिन पहले गुरुवार को ट्रेनिंग के दौरान गिल की उंगली में चोट लगी थी। वे मैच के पहले दो दिन मैदान पर नहीं उतरे थे। उनकी गैरमौजूदगी में चरु राहुल ने कप्तानी की।

संक्षिप्त समाचार

अंतरिक्ष का कचरा बनेगा करोड़ों का कारोबार मलबा हटाएंगी कंपनियां, उपग्रहों की मरम्मत भी होगी

वॉशिंगटन, एजेंसी। अंतरिक्ष के हजारों निष्क्रिय उपग्रह, इस्तेमाल हो चुके रॉकेटों के हिस्से और टकराव से पैदा हुए मलबे के टुकड़े भविष्य के अंतरिक्ष अभियानों के लिए खतरा बन रहे हैं और इसी खतरे में निजी कंपनियां नए कारोबारी अवसर तलाश रही हैं। ऑर्बिट रडार के अनुसार अंतरिक्ष में करीब 30 हजार वस्तुओं को ट्रैक किया जा रहा है। इनमें लगभग 18,500 सक्रिय उपग्रह हैं, जबकि बाकी मलबा या इस्तेमाल हो चुके रॉकेट के हिस्से हैं। पृथ्वी की निचली कक्षा में स्थिति तेजी से बदल रही है। यहां हजारों उपग्रहों के साथ दशकों की अंतरिक्ष गतिविधियों से पैदा हुआ मलबा भी मौजूद है। यही संकट अब अंतरिक्ष में एक नए सेवा उद्योग की नींव रख रहा है। जापान की कंपनी एस्ट्रोस्केल ऐसे अंतरिक्ष यान विकसित कर रही है, जो कक्षा में जाकर निष्क्रिय वस्तुओं को पकड़ सकें और उन्हें हटाने में मदद करें। कंपनी ने कक्षा में दूसरे अंतरिक्ष यान से जुड़ने की क्षमता का प्रदर्शन भी किया है। यह काम बेहद जटिल है। पृथ्वी की निचली कक्षा में वस्तुएं करीब 7 से 8 किलोमीटर प्रति सेकंड की गति से चलती हैं और कई निष्क्रिय उपग्रह अनियंत्रित ढंग से घूमते रहते हैं। लक्समबर्ग की कंपनी क्लियरस्पेस मलबा हटाने से आगे बढ़कर उपग्रहों की जांच, मरम्मत, रखरखाव और उनकी उम्र बढ़ाने का बाजार तैयार करना चाहती है।

युद्ध का दंश: गाजा मददगारों ने इस्राइल पर लगाए प्रताड़ना के आरोप, अंधेरे कंटेनर और बिजली के झटकों का किया दावा

पेरिस/इस्तांबुल, एजेंसी। मई मध्य में ग्लोबल सुमुद फ्लोटिला संगठन के कुछ कार्यकर्ता समुद्र के रास्ते सहायता लेकर गाजा की नाकाबंदी तोड़ने की कोशिश कर रहे थे। इसी दौरान इस्राइली सैन्य बलों ने उन्हें हिरासत में ले लिया। छूटने के बाद 24 में 22 कार्यकर्ताओं ने दावा किया कि उन्हें हिरासत में बुरी तरह प्रताड़ित किया गया। लात-घूंसों से पीटा गया, अंधेरे कंटेनरों में रखा गया। यही नहीं, उन्हें बिजली के झटके दिए गए और उनका यौन उत्पीड़न भी किया गया। पीड़ितों ने बताया कि मई मध्य में लगभग 50 नौकाओं से 400 से अधिक कार्यकर्ता तुर्किये से रवाना हुए थे। उनका इरादा युद्धग्रस्त गाजा के लोगों के लिए भोजन और आवश्यक मानवीय सहायता पहुंचाना था। गाजा तट से काफी पहले अंतरराष्ट्रीय जलक्षेत्र में ही इस्राइली नौसेना के कमांडो ने इस बेड़े को अपने कब्जे में ले लिया। कार्यकर्ताओं को पहले इस्राइली जहाजों पर और बाद में दक्षिणी इजरायल के अश्दोद बंदरगाह पर लगभग तीन दिनों तक हिरासत में रखा गया। इस्राइल के राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्री इतामार बेन-ग्वीर ने इस दौरान सोशल मीडिया पर एक वीडियो भी जारी किया गया, जिसमें वह हिरासत में लिए गए कार्यकर्ताओं का मजाक उड़ाते नजर आए थे। इस बीच, इस्राइल ने कार्यकर्ताओं के लगाए आरोपों को निराधार बताया है। ऑस्ट्रेलियाई फिल्म निर्माता और कार्यकर्ता जूलियट लैमोंट ने आरोप लगाया कि उन्हें एक शिपिंग कंटेनर के अंदर गंभीर रूप से पीटा गया और यौन उत्पीड़न किया गया। वहीं, इतालवी कार्यकर्ता डेरियो कैरोतेनुतो ने बताया कि उन्हें और अन्य लोगों को बेहद तंग जगहों पर फर्श पर सोने के लिए मजबूर किया।

पहले पति संग खूनी जंग, अब यूक्रेन के ड्रोन से मुकाबला; रूस की सबसे रईस महिला का साम्राज्य संकट में

मॉस्को/बर्लिन, एजेंसी। वह सात बच्चों की मां हैं, कभी अंग्रेजी टीचर रहीं और फिर जब यूरोपीय कैटलॉग से कपड़े बेचना शुरू किया तो किस्मत पलट गई। तात्याना किम की ई-कॉमर्स कंपनी वाइल्डबेरीज ने रूस में अपना दबदबा बना लिया। उनके साम्राज्य का अंदाजा इसी से लगता है कि वह रशियन अमेजन कहलाती हैं। सबसे अमीर रूसी महिला को राष्ट्रपति पुतिन की सेना का साथ देने की सजा 49,000 करोड़ के नुकसान से चुकानी पड़ी है। उनका कारोबार यूक्रेन के 'ऑपरेशन वाइल्डबेरीज' का निशाना बन रहा है। तात्याना किम की कहानी में बारूद नया नहीं है। साल 2024 में जब उन्होंने क्रेमलिन यानी रूसी राष्ट्रपति भवन की मध्यस्थता से एक आउटडोर विज्ञापन कंपनी के साथ विलय किया, तो उनके पूर्व पति व्लादिस्लाव बकालचुक ने इसे कॉरपोरेट रेड करार दे डाला। विवाद इतना बढ़ा कि व्लादिस्लाव बाकायदा हथियारबंद चेचन लड़ाकों की फौज लेकर मॉस्को स्थित कंपनी के मुख्य दफ्तर पहुंच गया। रेड स्क्वायर के पास हुई इस खूनी गैंगवार में 2 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई और 7 गंभीर रूप से घायल हुए।

एक सदी बाद मिटा गुमनामी का दाग: प्रथम विश्वयुद्ध में शहीद हुए थे 9,909 पंजाबी सैनिक; इतिहास में दर्ज हुआ नाम

लंदन, एजेंसी। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटिश सेना की ओर से लड़ते हुए जान गंवाने वाले करीब 10,000 पंजाबी सैनिकों को आखिरकार एक सदी बाद आधिकारिक पहचान मिल गई है। वर्षों तक ब्रिटेन के सरकारी रिकॉर्ड में गुमनाम रहे इन सैनिकों के नाम अब कॉमनवेल्थ वार ग्रेव कमीशन के रजिस्टर में दर्ज किए गए हैं। यह काम ब्रिटिश इतिहासकारों और अधिकारियों की वर्षों की मेहनत के बाद संभव हो पाया है। इस ऐतिहासिक कवायद में 9,909 सैनिकों के नाम आधिकारिक शहीद रिकॉर्ड में शामिल किए गए हैं।

भारत में ब्रिटिश शासन के दौर में पंजाब के एक गांव में रहने वाले केसा सिंह भी उन सैनिकों में शामिल थे, जिन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध में हिस्सा लेने के लिए अपना घर-परिवार छोड़ दिया था। उन्होंने मौजूदा इराक के इलाके में ब्रिटिश सेना की ओर से लड़ाई लड़ी। ऑटोमन क्षेत्र में युद्ध के दौरान घायल होने के बाद उनकी मौत हो गई और वह फिर कभी अपने घर नहीं लौट सके। हालांकि, ब्रिटेन के आधिकारिक रिकॉर्ड में उन्हें वह सम्मान और पहचान नहीं मिल सकी, जिसकी उनके परिवार को उम्मीद थी।

लाहौर संग्रहालय के अभिलेखागार से कैसे मिली सैनिकों की पहचान : इन गुमनाम सैनिकों की पहचान का प्रयास 2014 में शुरू हुआ था। इसका नेतृत्व ब्रिटिश इतिहासकार और यूके पंजाब हेरिटेज एसोसिएशन के अध्यक्ष अमनदीप मंद्रा ने किया। शोध के दौरान पाकिस्तान के लाहौर संग्रहालय के अभिलेखागार में प्रथम विश्वयुद्ध में मारे गए पंजाबी सैनिकों के हाथ से लिखे नाम मिले। इन दस्तावेजों से सैनिकों की पहचान, उनके गृह नगर और कुछ मामलों में उनकी मौत से जुड़ी परिस्थितियों का भी पता चला।

14 लाख भारतीय सैनिकों ने प्रथम विश्वयुद्ध में निभाई थी भूमिका : 1914 से 1918 के बीच चले प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप के करीब 14 लाख सैनिकों ने ब्रिटिश भारतीय सेना में सेवा दी थी। इनमें बड़ी संख्या पंजाब से आने वाले सैनिकों की थी। इन सैनिकों ने ब्रिटिश सेना के लिए विभिन्न युद्ध मोर्चों पर लड़ाई लड़ी, लेकिन युद्ध में जान गंवाने के बावजूद बड़ी संख्या में भारतीय सैनिकों को आधिकारिक रिकॉर्ड में वह पहचान नहीं मिली, जो ब्रिटिश सैनिकों को दी गई थी। इंग्लैंड के लीसेस्टर में रहने वाले केसा सिंह के परपोते और डेंटिस्ट डॉ. इंदर सिंह पालाहे ने इस ऐतिहासिक बदलाव पर कहा कि अब उन्हें थोड़ा अधिक पूर्ण महसूस हो रहा है। हालांकि, आधिकारिक रिकॉर्ड में केसा सिंह की उम्र या उनकी मृत्यु की तारीख का उल्लेख नहीं है, लेकिन उनका नाम अब उन सैनिकों की सूची में दर्ज हो गया है, जिन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध में अपनी जान गंवाई थी।

नस्ली भेदभाव के कारण क्यों छूट गए थे हजारों सैनिकों के नाम : ब्रिटेन ने दोनों विश्वयुद्धों में मारे गए ब्रिटिश सैनिकों की सूचियों को व्यवस्थित तरीके से संभालकर रखा। इनकी संख्या 10 लाख से अधिक थी। इसके विपरीत, एशिया और अफ्रीका के उपनिवेशों से आने वाले करीब 1 लाख सैनिकों और अन्य सैन्यकर्मियों के रिकॉर्ड को उसी तरह संरक्षित और दर्ज करने का प्रयास नहीं किया गया। कॉमनवेल्थ वार ग्रेव्स कमीशन के आधिकारिक इतिहासकार जॉर्ज हे के अनुसार, इन सैनिकों के नाम रिकॉर्ड से छूटने के पीछे भेदभावपूर्ण रवैया और तीन महाद्वीपों में फैले सैन्य संघर्ष के दौरान रिकॉर्ड तैयार करने की व्यावहारिक चुनौतियां, दोनों जिम्मेदार थीं।

2021 की जांच में भी सामने आया था नस्लवाद का पहलू : कॉमनवेल्थ वार ग्रेव्स कमीशन की स्थापना 1917 में उन सैन्यकर्मियों की मौतों का रिकॉर्ड तैयार करने और उन्हें याद रखने के लिए की गई थी, जिन्होंने दोनों विश्वयुद्धों में ब्रिटेन की ओर से लड़ाई लड़ी थी। हालांकि, 2021 में हुई एक जांच में पाया गया था कि उपनिवेशों से आने वाले सैनिकों को आधिकारिक मान्यता नहीं मिलने के पीछे पूर्वाग्रह और नस्लवाद भी एक महत्वपूर्ण कारण था। अब वर्षों की खोज और ऐतिहासिक दस्तावेजों की पड़ताल के बाद 9,909 पंजाबी सैनिकों के नाम आधिकारिक रिकॉर्ड में शामिल किए गए हैं। यह कदम उन भारतीय सैनिकों को एक सदी बाद सम्मान और पहचान देने की दिशा में महत्वपूर्ण माना जा रहा है, जिन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध में ब्रिटिश सेना की ओर से लड़ते हुए अपनी जान गंवाई थी।

दुनिया का आखिरी परमाणु हमला, एक झटके में पिघली शरीर की चमड़ी, लाखों की हुई थी मौत

संयुक्त राष्ट्र, एजेंसी। 6 अगस्त और 9 अगस्त 1945, यह वह दो तारीखें हैं, जब पूरी दुनिया को परमाणु बमों के जोखिम और इनके इस्तेमाल से होने वाले सर्वनाश का पहली और आखिरी बार पता चला था। जहां पहली तारीख हिरोशिमा में अमेरिकी परमाणु हमले की है तो वहीं दूसरी तारीख अमेरिका के ही नागासाकी पर हमले की है। दोनों ही घटनाओं में 1.5 लाख से 2.5 लाख लोगों की जान चली गई थी। आज इन घटनाओं को 81 साल पूरे हो चुके हैं। आइये जानते हैं दुनिया के दो पहले और आखिरी परमाणु हमलों के बारे में। जापान में रोज की तरह एक सामान्य सुबह हुई थी। हर कोई अपने रोजमर्रा के काम को निपटा रहा था। कई लोग दफ्तर जा रहे थे। बच्चे स्कूल में पढ़ रहे थे। तभी जापानी समय के अनुसार 8:15 पर हिरोशिमा शहर के बीच में एक तेज धमाका हुआ, आंखों को अंधा कर देने वाली तेज रोशनी चमकी, आसमान की तरफ एक बड़ा धुएं का गुबार उठा और सब कुछ तबाह हो गया। इस सुबह ने हिरोशिमा के लोगों की जिंदगी में तबाही मचा दी। एक झटके में हजारों लोग मारे गए। यह हिरोशिमा पर परमाणु हमला था जो अमेरिका की तरफ से कराया गया था। इसके बाद 9 अगस्त 1945 को अमेरिका ने जापान के एक और शहर नागासाकी पर दूसरा परमाणु हमला किया। इन दोनों हमले में लाखों निर्दोष लोगों की जान चली गई थी। इस हमला इतना भयानक था कि धमाके की आवाज से लोग बहरे हो गए। इसकी तेज रोशनी ने लोगों की अंधा कर दिया। धमाके से उत्पन्न होने वाली गर्मी से लोगों का चमड़ी पिघल गई थी।

हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु हमला : अमेरिकी ऊर्जा विभाग के द्वारा चलाए गए मैनहैटन प्रोजेक्ट की एक रिपोर्ट से पता चला कि 6 अगस्त, 1945 की सुबह, एनोला गे नामक एक बी-29 बमवर्षक विमान तिनियान द्वीप से उड़ान भरकर उत्तर-पश्चिम दिशा में जापान की ओर बढ़ रहा था। बमवर्षक का मुख्य लक्ष्य हिरोशिमा शहर था। हिरोशिमा की नागरिक आबादी लगभग 3,00,000 थी और यह एक महत्वपूर्ण सैन्य केंद्र था, जिसमें लगभग 43,000 सैनिक थे। 509वें कम्पोजिट ग्रुप के कमांडर कर्नल पॉल टिब्बेट्स द्वारा संचालित बमवर्षक विमान ने हिरोशिमा समय के अनुसार लगभग 8:15 बजे एनोला गे ने शहर के ऊपर अपना 9,700 पाउंड का यूरेनियम गन-प्रकार का बम 'लिटिल बॉय' गिरा दिया। जापान इससे पहले हिरोशिमा के हमले से उबर ही पाता कि अमेरिका ने ठीक तीन दिन बाद जापान के नागासाकी पर हमला कर दिया। 9 अगस्त, 1945 को अमेरिकी वायुसेना के मेजर चार्ल्स स्वीनी द्वारा संचालित 'बॉक्सकार' नामक यूएसएएएफ बी-29 विमान से 'फैट मैन' गिराया गया था।

ईरान के सर्वोच्च नेता मोजतबा खामेनेई की सेहत पर अटकलें: सामने आया नया वीडियो क्या है इसकी सच्चाई

तेहरान, एजेंसी। ईरान के सर्वोच्च नेता मोजतबा खामेनेई की सेहत को लेकर चिंताओं के बीच उनका कथित नया वीडियो सामने आया है। इस वीडियो को ईरान की अर्ध-सरकारी मेहर न्यूज एजेंसी ने शनिवार को जारी किया। इस बिना तारीख वाले वीडियो में मोजतबा खामेनेई की तबीयत ठीक दिखाई दे रही है। वह कुछ लोगों के साथ बैठके हुए हैं और उनसे बातचीत कर रहे हैं। जबकि सामने बैठे लोग उनकी बातों को ध्यान से सुनते हुए दिखाई दे रहे हैं। हालांकि, अभी यह पता नहीं चल पाया है कि यह वीडियो कब बनाया गया था। यह भी पुष्टि नहीं हुई है कि वीडियो में दिखाई दे रहा व्यक्ति मोजतबा खामेनेई ही है। हालांकि, शुक्रवार को ईरानवायर ने राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन के प्रशासन के करीबी सूत्रों के हवाले से बताया था कि मोजतबा खामेनेई के 'बेहद गंभीर हालत' में होने की अफवाहें चल रही हैं।

इस्राइली मीडिया ने क्या दावा किया : इस्राइल के कुछ मीडिया संस्थानों ने भी खबर दी कि मोजतबा 'गंभीर हालत' में हैं। जेरूसलम पोस्ट ने एक सूत्र के हवाले से कहा, अगर हमें जल्द ही उनकी शहादत की खबर सुनने को मिले तो हमें हैरानी नहीं होगी।

अली खामेनेई की मौत के बाद सर्वोच्च नेता बने मोजतबा : मोजतबा खामेनेई अपने पिता अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत के बाद ईरान के सर्वोच्च नेता बने। उनके पिता की 28 फरवरी को अमेरिका और इस्राइल के संयुक्त हमलों में मौत हो गई थी। इन्हीं हमलों के बाद से युद्ध शुरू हुआ और अब भी जारी है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, इन्हीं हमलों में मोजतबा घायल हो गए थे और उनके शरीर को गंभीर नुकसान पहुंचने की भी आशंका जताई गई थी। उनका इलाज चल रहा है। हमले के बाद से वह सार्वजनिक रूप से दिखाई नहीं दिए हैं। सर्वोच्च नेता बनाए जाने के बाद भी वह सार्वजनिक रूप से सामने नहीं आए। यहां तक कि पिछले महीने हुए अपने पिता के नमाज-ए-जनाजा में भी वह दिखाई नहीं दिए। रिपोर्ट्स के मुताबिक, मोजतबा अपनी सुरक्षा के लिए ईरान के वरिष्ठ अधिकारियों से सीधे बात नहीं कर रहे हैं।

हिमांशी खुराना हत्याकांड का महीनों बाद खुला राज: एयरपोर्ट से साथी अब्दुल गफूरी गिरफ्तार, कनाडा में था वांटेड

टोरंटो, एजेंसी। कनाडा के टोरंटो में भारतीय मूल की 30 वर्षीय हिमांशी खुराना की दिसंबर में हुई हत्या के मामले में पुलिस ने महीनों बाद उनके साथी 32 वर्षीय अब्दुल गफूरी को एयरपोर्ट से गिरफ्तार किया है। गफूरी पर फर्स्ट-डिग्री मर्डर का आरोप लगाया गया है और वह कनाडा-व्यापी वारंट के तहत वांछित था। पुलिस के अनुसार, पीड़िता और संदिग्ध एक-दूसरे को जानते थे। मामले में कानूनी कार्यवाही जारी है।

अब्दुल गफूरी को कहां से किया गया गिरफ्तार : टोरंटो निवासी गफूरी को शुक्रवार को एयरपोर्ट से गिरफ्तार किया गया। अधिकारियों ने शनिवार को स्थानीय समयानुसार बताया कि उस पर खुराना की 'फर्स्ट-डिग्री मर्डर' यानी पूर्व नियोजित और जानबूझकर की गई हत्या का

आरोप लगाया गया है। अधिकारियों के अनुसार, टोरंटो पुलिस के भगोड़े आरोपियों को पकड़ने वाले दस्ते और हत्या की जांच करने वाली यूनिट ने गफूरी को कनाडा वापस लाने के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुलिस सेवाओं के साथ मिलकर काम किया।

किस देश में था गफूरी, पुलिस ने क्यों नहीं बताया : हालांकि, अधिकारियों ने यह नहीं बताया कि गिरफ्तारी से पहले गफूरी किस देश में था। पुलिस की ओर से इस संबंध में कोई और जानकारी भी साझा नहीं की गई है। हिमांशी खुराना पिछले साल 20 दिसंबर को मृत पाई गई थीं। अधिकारियों ने बताया था कि इससे एक दिन पहले, 19 दिसंबर को स्ट्रैचन एवेन्यू और वेलिंगटन स्ट्रीट वेस्ट इलाके से एक व्यक्ति के लापता होने की सूचना मिली थी। अगले दिन पुलिस को उस समय दुखद जानकारी मिली, जब लापता महिला हिमांशी खुराना एक घर के अंदर मृत पाई गईं।

पुलिस को कब पता चला कि मामला हत्या का है : पुलिस ने पुष्टि की थी कि पीड़िता और संदिग्ध एक-दूसरे को जानते थे। शुरुआती जांच के बाद पुलिस ने इस मामले को हत्या के रूप में दर्ज किया था। टोरंटो स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास ने भारतीय मूल की महिला की हत्या पर दुख व्यक्त किया था। दूतावास ने कहा था कि अधिकारी पिछले कुछ दिनों से मामले पर बारीकी से नजर रख रहे हैं और कनाडाई अधिकारियों के साथ मिलकर परिवार को हर संभव सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। अब्दुल गफूरी 'फर्स्ट-डिग्री मर्डर' के आरोप में कनाडा-व्यापी वारंट के तहत वांछित था। यह एक गंभीर आपराधिक आरोप है, जिसमें अदालत में हत्या के पूर्व नियोजन और इरादे को साबित किए जाने पर पैरोल के बिना आजीवन कारावास की सजा हो सकती है।

ब्राजील में हेलिकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त: जंगल में आग लगी, तीन महिलाओं समेत चार लोगों की मौत; कैसे हुआ हादसा

रियो डी जनेरियो, एजेंसी। ब्राजील के शहर रियो डी जनेरियो में एक हेलिकॉप्टर जंगल वाले इलाके में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। दमकल विभाग ने बताया कि इस हादसे में चार लोगों की मौत हो गई। हादसा शनिवार (स्थानीय समय) को सुबह करीब 11:11 बजे ऑल्टो दा बोआ विस्टा के विस्टा चिनेसा इलाके में हुआ। दमकल विभाग को घटनास्थल पर भेजा गया। बाद में घने पेड़-पौधों वाले इलाके में हेलिकॉप्टर का मलबा मिला। शिन्हुआ न्यूज एजेंसी के अनुसार, विशेष दलों ने जमीन के रास्ते हादसे वाली जगह तक पहुंचकर राहत और बचाव का काम शुरू किया। हेलिकॉप्टर गिरने के बाद वहां आग भी लग गई थी, जिसे बुझाने के लिए दमकल की टीमें तैनात

की गईं। हादसे में हेलीकॉप्टर का पायलट और कोलंबिया की तीन महिलाएं सवार थीं। तीनों महिलाएं एक ही परिवार की सदस्य थीं। अधिकारियों ने शुरुआत में चार लोगों की मौत की पुष्टि की। लेकिन मृतकों की पहचान और अन्य जानकारी अभी जारी नहीं की गई। रियो डी जनेरियो के मेयर ने क्या कहा रियो डी जनेरियो के मेयर एडुआर्डो कैवेलिएरे ने एक्स पर पोस्ट कर कहा, विस्टा चिनेसा के पास तिजुका नेशनल पार्क में आज हुए हेलिकॉप्टर हादसे के पीड़ितों के परिवारों के प्रति मेरी संवेदनाएं। उन्होंने बताया कि उन्होंने ब्राजील की विमानन एजेंसी (एएनएसी) के अधिकारियों से भी संपर्क किया है। उन्होंने कहा कि रियो प्रशासन ने एएनएसी से तुरंत कार्रवाई करने और निगरानी बढ़ाने को कहा है। साथ ही, शहर में लगातार बढ़ रही हेलिकॉप्टर उड़ानों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की गई है। उन्होंने कहा कि जरूरी कदम उठाने और कार्रवाई में मदद के लिए रियो प्रशासन अपनी पूरी व्यवस्था एएनएसी को उपलब्ध कराएगा। इससे पहले जून में रियो के ऊपर दो हेलीकॉप्टर आपस में टकरा गए थे। मरने वालों में अमेरिकी गायक ओलिवर ट्री और अर्जेंटीना के यूट्यूबर गैस्पर प्रिम भी शामिल थे। पिछले साल ब्राजील के दक्षिण-पूर्वी राज्य साओ पाउलो के पर्यटन शहर उबातुबा में समुद्र तट के पास एक छोटा विमान दुर्घटनाग्रस्त होकर आग की चपेट में आ गया था।

शर्तें मानेगा अमेरिका, तभी खुलेगा होर्मुज': आईआरजीसीकी चेतावनी; ओमान से समझौते के कितने करीब ईरान

तेहरान, एजेंसी। यमनी सशस्त्र बलों ने ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों पर मारिब शहर में फिर से हमले करने का आरोप लगाया है। यमनी सेना के मुताबिक, इन हमलों में रिहायशी इलाकों और विस्थापित लोगों के रहने वाले शिविरों को बैलिस्टिक मिसाइलों से निशाना बनाया गया। अल जजीरा की रिपोर्ट के अनुसार, यमनी सशस्त्र बलों ने अपने आधिकारिक एक्स अकाउंट पर जारी एक बयान में शनिवार को हुए हमलों के लिए ईरान समर्थित हूतियों को जिम्मेदार ठहराया। बयान में कहा गया कि हमलों का निशाना मारिब शहर, उसके इलाकों और घनी आबादी वाले उन शिविरों को बनाया गया, जहां स्थानीय लोग और विस्थापित लोग रह रहे हैं।

हमले में दो लोगों की मौत और 14 घायल : इसी बीच, राष्ट्रपति नेतृत्व परिषद के सदस्य मेजर जनरल सुल्तान बिन अली अल-अरादा ने मारिब में सुरक्षा और सैन्य समिति के साथ एक बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में सेना प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल सगीर बिन अजीज भी शामिल हुए। हूती विद्रोहियों के मिसाइल और ड्रोन हमलों में दो लोगों की मौत हो गई और 14 अन्य घायल हो गए। एक सैन्य सूत्र के हवाले से बयान में कहा गया कि इन हमलों का जवाब उचित समय और उचित जगह पर दिया जाएगा। इस्लामी रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स ने शनिवार को कहा कि होर्मुज जलडमरूमध्य दोबारा तभी खोला जाएगा, जब अमेरिका ईरान की शर्तों को 'पूरी तरह' स्वीकार करेगा। वहीं, तेहरान और ओमान ने कहा है कि वे इस अहम समुद्री मार्ग के लिए एक नए जहाजरानी प्रोटोकॉल पर समझौते के 'बहुत करीब' पहुंच गए हैं। अल जजीरा की रिपोर्ट के अनुसार, होर्मुज जलडमरूमध्य दुनिया के लिए एक अहम समुद्री मार्ग है।

आईआरजीसी ने क्या कहा : आईआरजीसी के प्रवक्ता सरदार मोहेबी ने कहा कि जलडमरूमध्य को दोबारा खोलना 'कुछ खास व्यवस्थाओं और शर्तों' पर निर्भर करेगा। उनके अनुसार, जलडमरूमध्य तभी खोला जाएगा, जब अमेरिका ईरान की शर्तों को पूरी तरह स्वीकार करे और क्षेत्रीय बातचीत में दखल देना बंद करे। यह बयान उस समय आया, जब ईरानी अधिकारियों ने होर्मुज जलडमरूमध्य से जहाजों की आवाजाही के लिए नए प्रोटोकॉल और इस अहम समुद्री रास्ते को फिर से खोलने की शर्तों को लेकर ओमान के साथ बातचीत की।

अमेरिका के सामने ईरान ने क्या शर्तें रखीं : ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा कि ईरान और ओमान होर्मुज जलडमरूमध्य से जहाजों की आवाजाही के लिए नई व्यवस्था पर समझौते तक पहुंचने के 'बहुत करीब' हैं। हालांकि, उन्होंने कहा कि जलडमरूमध्य को फिर से खोलने से पहले कुछ अतिरिक्त शर्तें पूरी करनी होंगी। इनमें अमेरिका की ओर से ईरान को मुआवजा दिया जाना भी शामिल है। अल जजीरा के मुताबिक, ईरान की सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के सचिव मोहम्मद बाघेर ज़ोलघद्र ने कई शर्तें बताईं। इनमें ईरान के खिलाफ अमेरिका की धमकियां बंद करना, फारस की खाड़ी के इस देश और उसके क्षेत्रीय सहयोगियों के खिलाफ सैन्य कार्रवाई रोकना, नाकाबंदी में शामिल नौसेना और वायुसेना की ताकतों को वापस बुलाना, संघर्ष के दौरान हुए नुकसान का मुआवजा देना, प्रतिबंध हटाना और ईरान की जब्त की गई संपत्तियों को फिर से जारी करना शामिल है।

लड़ाई में हथियार घटने से अमेरिका परेशान: ईरान जंग ने खोली पोल; पेंटागन ने डिफेंस कंपनियों को दिया नया टारगेट

तेहरान, एजेंसी। ईरान के साथ हालिया संघर्ष में अमेरिकी मिसाइल इंटरसेप्टर और अन्य गोला-बारूद के इस्तेमाल से हथियारों का भंडार काफी घट गया है। इसी चिंता के बीच पेंटागन ने रक्षा कंपनियों से उत्पादन क्षमता बढ़ाने और हथियारों की डिलीवरी में तेजी लाने की योजना मांगी है। कंपनियों को 21 दिनों के भीतर अपनी योजनाएं देने को कहा गया है। पैट्रियट और ञ्ञ्।ॠ जैसे अहम एयर डिफेंस इंटरसेप्टर के घटते स्टॉक ने अमेरिका के सामने अपने रक्षा भंडार को तेजी से फिर से भरने की चुनौती खड़ी कर दी है।

पेंटागन आखिर हथियारों का उत्पादन बढ़ाने पर इतना जोर क्यों दे रहा है : पेंटागन के प्रवक्ता शॉन पार्नेल ने शनिवार को एक बयान में कहा कि रक्षा विभाग गोला-बारूद की खरीद बढ़ाने के लिए तेजी से काम कर रहा है, ताकि 'हमारे सैनिकों को जरूरत और खतरे के मुताबिक तेजी से हथियार उपलब्ध कराए जा सकें।' उन्होंने पिछले हफ्ते इस प्रक्रिया में तेजी लाने के विभाग के प्रयासों की पुष्टि की। हालांकि, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यह कदम रक्षा क्षमताओं के आधुनिकीकरण के उस व्यापक अभियान का हिस्सा है, जो पांच महीने पुराने संघर्ष से पहले ही शुरू हो चुका था।

डिफेंस कंपनियों को 21 दिनों में क्या योजना देने को कहा गया है : द वॉशिंगटन पोस्ट' को मिले एक मेमो के अनुसार, डिप्टी डिफेंस सेक्रेटरी स्टीव फीनबर्ग ने बुधवार को रक्षा उद्योग के नेताओं को पत्र लिखकर उनसे महत्वपूर्ण क्षमताओं के लिए डिलीवरी शेड्यूल को 'काफी तेज और आक्रामक' बनाने और/या उत्पादन बढ़ाने की योजनाएं जमा करने को कहा है। कंपनियों को यह योजना तैयार करने के लिए 21 दिनों से ज्यादा का समय नहीं दिया गया है। फीनबर्ग ने पत्र में लिखा हमें अपने कार्यक्रमों की समय सीमा तेजी से आगे बढ़ानी होगी और अभी अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ानी होगी।

ईरान के साथ लड़ाई के बाद अमेरिकी मिसाइल भंडार पर कितना असर पड़ा : एक नए विश्लेषण के

अनुसार, यह मेमो ऐसे समय में आया है, जब ईरान के साथ हालिया लड़ाई में अमेरिकी सेना के उन्नत मिसाइल इंटरसेप्टर का भंडार और कम हो गया है। इससे यह चिंता बढ़ गई है कि अगर लड़ाई दोबारा शुरू होती है, तो अमेरिकी सैनिकों के लिए खतरा और बढ़ सकता है। वॉशिंगटन स्थित थिंक टैंक 'सेंटर फॉर स्ट्रैटेजिक एंड इंटरनेशनल स्टडीज' के विश्लेषण के मुताबिक, पैट्रियट और ञ्ञ्।ॠ इंटरसेप्टर के घटते भंडार के कारण अमेरिका और उसके मध्य-पूर्वी सहयोगियों को अपने एयर डिफेंस सिस्टम की सुरक्षा के लिए अधिक जोखिम उठाना पड़ सकता है।

कम मिसाइलें होने पर अमेरिकी एयर डिफेंस के सामने क्या चुनौती होगी : विश्लेषण में कहा गया है कि अमेरिकी सेना ईरान की ओर से आने वाले ड्रोन और मिसाइलों के खिलाफ कम संख्या में इंटरसेप्टर दाग सकती है। इसका सीधा असर एयर डिफेंस की प्रभावशीलता पर पड़ सकता है और आने वाली मिसाइलों या ड्रोन के बच निकलने की संभावना बढ़ सकती है।

ट्रंप ने हथियारों की कमी की खबरों पर क्या कहा : हाल के दिनों में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने गोला-बारूद की कमी से जुड़ी सार्वजनिक रिपोर्टों पर नाराजगी जताई है। गुरुवार को उन्होंने 'ट्रुथ सोशल' पर पोस्ट करते हुए कहा कि अमेरिका के पास 'भारी मात्रा में' हथियारों का भंडार है। जरूरत के हिसाब से बड़ी मात्रा में इनका उत्पादन किया जा रहा है और अमेरिका भेजा जा रहा है।

शनिवार को शॉन पार्नेल ने पुष्टि की कि हथियारों का उत्पादन तेजी से बढ़ाने के लिए फीनबर्ग की ओर से भेजा गया मेमो 'वास्तविक' है। उन्होंने कहा कि यह मेमो कांग्रेस के समक्ष फंडिंग के लिए पेश किए जाने वाले वित्त वर्ष 2028 के बजट की तैयारियों में मदद करेगा। पार्नेल ने इसे रक्षा औद्योगिक आधार को फिर से मजबूत करने के पेंटागन के जारी प्रयासों के अनुरूप बताया। कांग्रेस में फिलहाल रक्षा खर्च से जुड़ा एक विधेयक अटका हुआ है। सांसद ईरान के खिलाफ ट्रंप की सैन्य कार्रवाई को लेकर नाराज हैं और व्हाइट हाउस की उस मांग का विरोध कर रहे हैं, जिसमें पेंटागन का बजट पिछले साल के करीब 900 अरब डॉलर से बढ़ाकर 1.5 ट्रिलियन डॉलर करने की बात कही गई है।

स्वामी, मुद्रक व् प्रकाशक: सुरेश मौर्या द्वारा अष्ठ विनायक ओफ़्सेट एफपी, 149 प्लोट 26 खोडीयारनगर, सिद्धिविनायक मंदीर के पास ,भाटेना) हो.सो अंजना सुरत गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक : सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)

क्रांति समय

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

मुजफ्फरपुर में पहली बार कांवड़ियों पर हेलीकॉप्टर से पुष्पवर्षा, भक्तिमय हुआ माहौल

मुजफ्फरपुर (एजेंसी)। जिले में पहली बार कांवड़ियों पर हेलीकाप्टर से पुष्पवर्षा की गई। पहले सोमवार को सुबह सात बजे का समय तय किया था, लेकिन मौसम खराब होने और आसमान में बादल छाए रहने के कारण इसमें देरी हुई। करीब साढ़े आठ बजे हरिसभा चौक, रामदयालु, बाबा गरीबनाथ मंदिर, साहू पोखर और जिला स्कूल के समीप कांवड़ियों पर पुष्पवर्षा की गई। भक्ति में उत्साह का माहौल रहा। हर-हर महादेव के नारे से पूरा शहर गुंजायमान हो उठा। चारों तरफ भगवान शिव के जयकारे और बाबा गरीबनाथ की जय का उद्घोष सुनाई दे रहा था। बाबा गरीबनाथ धाम पर जलाभिषेक करने वाले कांवड़ियों के लिए ही नहीं बल्कि पूरे शहर के लिए यह एक अलौकिक अनुभूति थी। सड़कों पर असंख्य कांवड़ियों के साथ लोग अपने घरों के छत पर भी खड़े होकर इस ऐतिहासिक पल के गवाह बने। विदित हो कि पहलेजा घाट से जलबोझी कर बाबा गरीबनाथ मंदिर में जलाभिषेक करने की परंपरा दशकों पुरानी है। कांवड़ियों की सेवा कई प्रकार से जिला प्रशासन से लेकर अलग-अलग विभाग और सेवा दलों के द्वारा की जाती रही है, लेकिन यह पहला अवसर था जब पुष्पवर्षा की गई। कांवड़िया मार्ग में जिला प्रशासन की ओर से माइकिंग कर भी इसकी जानकारी दी गई थी। इससे कांवड़ियों में उत्साह का माहौल था। विदित हो कि उत्तराखंड और यूपी समेत अन्य राज्यों में कांवड़ यात्रा के दौरान हेलीकाप्टर से भक्तों पर पुष्पवर्ष कराए जाने की परंपरा सालों से चली आ रही है, लेकिन बिहार में यह पहला मामला है जब कांवड़ियों पर आसमान से पुष्पवर्षा कराई गई।

मुंबई में अवैध रूप से रह रहे 44 संदिग्ध बांग्लादेशी नागरिकों का पता चला

मुंबई (एजेंसी)। भारत में अवैध रूप से प्रवेश कर मुंबई के अलग-अलग इलाकों में रह रहे 44 बांग्लादेशी नागरिकों का वर्सोवा पुलिस ने पता लगाया है। पुलिस के अनुसार, चालू वर्ष में वर्सोवा और मुंबई के विभिन्न हिस्सों में की गई कार्रवाई के दौरान इन लोगों की पहचान की गई। यह कार्रवाई उत्तर प्रादेशिक विभाग के उत्तर परिमंडल-1 के अंतर्गत आने वाले वर्सोवा पुलिस थाने की आतंकवाद विरोधी टीम ने की। पुलिस के मुताबिक, प्रारंभिक जांच में सामने आया कि संबंधित लोगों ने वैध अनुमति या आवश्यक दस्तावेजों के बिना सीमा पार कर भारत में प्रवेश किया और इसके बाद मुंबई के विभिन्न इलाकों में रह रहे थे। पुलिस अब इनके भारत में प्रवेश और यहां रहने से संबंधित दस्तावेजों की जांच कर रही है। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, अवैध घुसपैठ से जुड़ी गतिविधियों पर नजर रखने के लिए वर्सोवा पुलिस की आतंकवाद विरोधी टीम ने जानकारी जुटाई। इसके बाद मुंबई के अलग-अलग इलाकों में जांच और दस्तावेज सत्यापन अभियान चलाया गया। इस कार्रवाई के दौरान 44 संदिग्ध बांग्लादेशी नागरिकों का पता लगाया गया। पुलिस ने उनके पहचान दस्तावेजों, भारत में रहने की अनुमति और देश में प्रवेश से संबंधित कागजात की जांच शुरू की है। जांच के आधार पर आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

छात्र प्रदर्शन पर सियासत गर्म : सीजेपी प्रवक्ता को पाखंडी कहने पर बवाल

रांची (एजेंसी)। झारखंड की राजधानी रांची में छात्र अपनी परीक्षाओं में धांधली के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन कर रहे हैं। दिल्ली के जंतर-मंतर पर प्रदर्शनों को सफल बनाने वाली कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के बड़े नेता अभी तक रांची नहीं पहुंचे हैं, हालांकि एआईएसए की नेहा बोरा वहां मौजूद हैं। इस बीच, सीजेपी प्रवक्ता सौरव दास ने छात्रों के समर्थन में वीडियो साझा किया, जिसमें रांची में मार्च निकालते हजारों छात्र दिख रहे हैं। इस पोस्ट पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कट्टर समर्थक और बीजेपी के पूर्व राष्ट्रीय प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने तीखा तंज कसा। पूनावाला ने सौरव दास को दोमुंहे, सुविधा-संपन्न पाखंडी कहकर सवाल किया कि क्या वे जीके1 से ही समर्थन कर रहे हैं?। यह बयान तब आया है जब रांची में छात्र विधानसभा का घेराव करने के लिए सड़कों पर उतरे हैं। शहजाद पूनावाला बीजेपी छोड़ने के बाद भी लगातार पीएम मोदी के पक्ष में सोशल मीडिया पर पोस्ट करते रहते हैं। सौरव दास ने अपने वीडियो में शाम के समय छात्रों के शांतिपूर्ण मार्च को दर्शाया था, जिस पर यह विवाद छिड़ा है।

पीएम मोदी-सीएम योगी की तस्वीरों से सजाई कांवड़ बनी आकर्षण का केंद्र

-हापुड़ में लोगों ने किया फूल-मालाओं से शिवभक्तों का स्वागत, बरसाए फूल

हापुड़ (एजेंसी)। श्रावण मास में हरिद्वार से गंगाजल लेकर लौट रहे कावड़ियों की आस्था के अलग-अलग रंग देखने को मिल रहे हैं। बुलंदशहर जिले के आवास विकास क्षेत्र के रहने वाले शिवभक्तों की एक भव्य कांवड़ आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। कांवड़ को पीएम मोदी और उत्तर प्रदेश के सीएम योगी आदित्यनाथ की तस्वीरों और कटआउट से विशेष रूप से सजाया गया है। हरिद्वार से गंगाजल लेकर

बुलंदशहर लौट रहे शिवभक्तों का जत्था रविवार को हापुड़ शहर में पहुंचा। कांवड़ पर सजी तस्वीरों को देखने लोगों की भीड़ जुट गई। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक कांवड़ की सजावट और श्रद्धालुओं के उत्साह ने माहौल को भक्तिमय बना दिया। हापुड़ में प्रवेश करते ही लोगों ने फूल-मालाओं से स्वागत किया। लोगों ने कांवड़ियों पर पुष्पवर्षा की। बुलंदशहर के रहने वाले शिवभक्तों ने कहा कि कांवड़ यात्रा केवल गंगाजल लाने की धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि आस्था और संस्कारों से जुड़ी यात्रा है। कांवड़ पर पीएम मोदी और सीएम योगी की तस्वीरें लगाने का उद्देश्य आध्यात्म के साथ देश और प्रदेश के प्रति सम्मान की भावना को प्रदर्शित करना है। शिवभक्तों ने कहा कि उनके लिए आध्यात्म और देशभक्ति अलग-अलग नहीं, बल्कि एक-दूसरे से जुड़ी भावनाएं हैं।

जब तक किरोड़ी लाल के शरीर में जान है, कोई आरक्षण को छू भी नहीं सकता

-राजस्थान के कृषि मंत्री ने आदिवासी महोत्सव में आरक्षण का किया समर्थन

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान के कृषि मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा ने एक आदिवासी महोत्सव में आरक्षण का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि जब तक मैं जीवित हूं तब तक आरक्षण को खत्म नहीं किया जा सकता है। मीणा ने आरक्षण खत्म करने की अटकलों को खारिज कर दिया और कहा कि जब तक किरोड़ी लाल के शरीर में जान है, कोई आरक्षण को छू भी नहीं सकता। मंत्री ने आदिवासी युवाओं से नशीले पदार्थों के सेवन से दूर रहने और सामाजिक बुराइयों से लड़ने के लिए मिलकर काम करने की अपील भी की।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक कार्यक्रम के दौरान मीणा के राजनीतिक जीवन और संघर्षों पर आधारित एक किताब भी लॉन्च की गई। किरोड़ी लाल मीणा ने अपने राजनीतिक सफर के बारे में बात करते हुए बताया कि उन्होंने करीब 600 आंदोलनों में हिस्सा लिया है, 17 बार जेल गए हैं और 138 कानूनी मामलों का सामना किया है। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार के खिलाफ उनकी लड़ाई जारी रहेगी। मीणा ने उन हालात का भी जिक्र किया जिनकी वजह से पंच अठाई को मीणा हाई कोर्ट के नाम से जाना जाने लगा। उन्होंने पंचायत से जुड़े एक विवाद का जिक्र किया, जब लगभग 50,000 लोगों की भीड़ दौसा की ओर मार्च कर रही थी, जिसमें बड़ी संख्या में महिलाएं भी शामिल थीं।

मीणा के मुताबिक जब भीड़ कई किलोमीटर आगे बढ़ गई, तो प्रशासन ने 14 गांव के बुजुर्गों या पंचों को बुलाया और उन्हें भीड़ के हवाले कर दिया। उन्हें आज भी समझ नहीं आता कि प्रशासन ने ऐसा फैसला क्यों किया। उन्होंने जोर देकर कहा कि जनता की शक्ति ही सर्वोपरि है और बताया कि इसी संघर्ष ने पंच अठाई को मीणा हाई कोर्ट की पहचान दिलाई। पंचना बांध से पानी का मुद्दा उठाते हुए मीणा ने लंबे संघर्ष के बाद पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करने के अपने प्रयासों का जिक्र किया। उन्होंने यह भी बताया कि चंबल नदी का पानी दौसा लाने का काम चल रहा है।

पुरानी घटना को याद करते हुए उन्होंने कहा कि 1985 में उनकी जान जा सकती थी, लेकिन ईश्वर की कृपा से वे बच गए। इस दौरान छात्राओं ने देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए, जबकि सरकारी कॉलेज के छात्रों ने मीणा संस्कृति को दर्शाने वाले कार्यक्रम पेश किए। मध्य प्रदेश के आदिवासी बच्चों ने भी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं, और स्टंट प्रदर्शन कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण रहे।

एफसीआरए बिल पर कांग्रेस का कड़ा रुख : बताया ईसाई विरोधी

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद के मानसून सत्र में सरकार द्वारा विदेशी अंशदान नियमन अधिनियम (एफसीआरए) में संशोधन के लिए नया बिल लाने की चर्चा के बीच, कांग्रेस ने इसका पुरजोर विरोध कर रही है। कांग्रेस ने प्रस्तावित एफसीआरए बिल को ईसाई विरोधी बताया है। कांग्रेस पार्टी का कहना है कि यह विधेयक देश में काम कर रहे अल्पसंख्यक संगठनों, विशेषकर ईसाई समुदायों द्वारा संचालित दूर-दराज के ग्रामीण और आदिवासी इलाकों में चल रहे स्कूलों और अस्पतालों को बुरी तरह प्रभावित करेगा। कांग्रेस सांसद हिबी ईडन ने चिंता जाहिर की है कि नए नियमों के तहत जिला मजिस्ट्रेट (डीएम) या उप-जिला मजिस्ट्रेट (एसडीएम) को उल्लंघन के आरोप में किसी भी संस्था की संपत्ति पर कब्जा करने का अधिकार मिल जाएगा, जिसमें पुराने मामले भी शामिल है। कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल ने स्पष्ट रूप से कहा है कि अगर मोदी सरकार जल्दबाजी में बिल लाती है, तब उनका यह सपना पूरा नहीं होने दिया जाएगा। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि कांग्रेस केवल एक विधायी मुद्दा नहीं, बल्कि अल्पसंख्यक वोटर्स को अपने पाले में लाने का एक बड़ा मौका मान रही है। केरल और पूर्वोत्तर के राज्यों के अलावा आंध्र प्रदेश और पंजाब जैसे राज्यों में भी ईसाई आबादी का एक बड़ा हिस्सा है, कांग्रेस पार्टी इस मुद्दे पर एकजुट करने की उम्मीद कर रही है। इससे पहले बजट सत्र के दौरान भी कांग्रेस ने इसी मुद्दे पर हंगामा किया था। समाजवादी पार्टी ने भी बिल का विरोध करने का मन बनाया है और अपने सांसदों को संसद में अनिवार्य रूप से उपस्थित रहने के लिए पत्र जारी किया है, जिससे यह साफ है कि विपक्ष इस मुद्दे पर एकजुट होकर एनडीए की घेराबंदी करेगा। दरअसल एफसीआरए एक ऐसा कानून है जो भारत में गैर-सरकारी संगठनों और धार्मिक निकायों द्वारा विदेशी फंडिंग के उपयोग को नियंत्रित करता है।

कश्मीर में हर घर तिरंगा अभियान शुरु, 17 तक चलेगा, तिरंगे में रंगी घाटी

-देशभक्ति गीत, सांस्कृतिक और खेल गतिविधियों में छात्र-छात्राओं ने लिखा भाग

श्रीनगर (एजेंसी)। कश्मीर संभाग क्षेत्र में हर घर तिरंगा अभियान-2026 और राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम की 150वीं वर्षगांठ के जश्न की शुरुआत हुई। देशभक्ति, सांस्कृतिक और खेल गतिविधियों से भरपूर यह अभियान 17 अगस्त तक चलेगा। अनंतनाग में आयोजित समारोह में डिप्टी कमिश्नर डा. बिलाल मोहिउद्दीन भट मुख्य अतिथि के रुप में शामिल हुए। इस कार्यक्रम में जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी, विभागों के अधिकारी, नागरिक, युवा स्वयंसेवक और बड़ी संख्या में आम नागरिक शामिल हुए।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक शोपियां में गवर्नमेंट गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल में एक बड़ा कार्यक्रम हुआ। इस अभियान में लोगों की भारी भागीदारी देखी गई। अलग-अलग क्षेत्रों के लोग तिरंगे के प्रति सम्मान व्यक्त करने और देश के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराने के लिए एक साथ आए।

स्कूलों और संस्थानों ने भी इस अभियान के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाने में अहम भूमिका निभाई। इस मौके पर शोपियां के एडिशनल डिप्टी कमिश्नर डा. जाकिर हुसैन नागरिकों व देश के बीच के रिश्ते को मजबूत करने में हर घर तिरंगा पहल के महत्व पर ज़ोर दिया।

कुपवाड़ा में अलग-अलग जगहों पर बड़ी रैलियां निकाली गईं जिनमें स्कूलों और कालेजों के छात्र, यूथ सर्विसेज़ एंड स्पोर्ट्स और सोशल वेलफेयर विभागों के अधिकारी, सुरक्षा बल के जवान और आम लोगों ने पूरे जोश के साथ हिस्सा लिया। त्राल में एक बड़ी तिरंगा रैली हुई। इस रैली में तिरंगे के नीचे एकता, देशभक्ति और राष्ट्रीय गौरव का शानदार नज़ारा देखने को मिला जिसमें समाज के हर वर्ग के लोग शामिल हुए।

पुलवामा के डिप्टी कमिश्नर डा. बशारत कय्यूम की अगुवाई में हुई इस रैली में त्राल के विधायक रफीक अहमद नाइक, अवंतीपोरा के एसएसपी सज्जाद अहमद शाह, त्राल के एडीसी साजिद शामिल हुए। इसमें नागरिकों ने भी पूरे जोश के साथ हिस्सा लिया। गांदरबल ज़िले में आयोजित कार्यक्रमों में छात्रों, युवाओं, सरकारी कर्मचारियों और आम लोगों ने पूरे जोश के साथ हिस्सा लिया। छात्रों ने देशभक्ति गीत पेश किए। जिससे राष्ट्रीय गर्व और सामूहिक भागीदारी का माहौल बना। ज़िले में अलग-अलग जगहों पर तिरंगा रैलियां भी निकाली गईं।

-ममता बनर्जी के काफिले पर हमले पर सियासत तेज

मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी बोले- जनता के गुस्से का नतीजा

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के हलीशहर में तृणमूल कांग्रेस के मृत कार्यकर्ता के परिजन से मिलने जा रहीं ममता बनर्जी के काफिले के विरोध को लेकर सियासत तेज हो गई है। मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने रविवार को दावा किया कि विरोध प्रदर्शन भारतीय जनता पार्टी के किसी कार्यकर्ता ने नहीं किया, बल्कि यह जनता के भारी गुस्से का नतीजा था। उन्होंने कहा कि मौके पर न तो भाजपा का कोई कार्यकर्ता मौजूद था और न ही पार्टी का झंडा दिखाई दिया। हलीशहर जाते समय प्रदर्शनकारियों ने ममता बनर्जी के वाहन को घेर लिया और उनके खिलाफ नारेबाजी की। आरोप है कि प्रदर्शनकारियों ने उनकी कार पर कीचड़, जूते और पत्थर भी फेंके। ममता बनर्जी उस तृणमूल कांग्रेस कार्यकर्ता के परिवार से मिलने जा रही थीं, जिसकी कथित तौर पर पुलिस हिरासत में मौत हुई थी।

शुभेंदु अधिकारी ने घटना में भाजपा की किसी भी तरह की संलिप्तता से इनकार करते हुए ममता बनर्जी पर तीखा हमला बोला। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार के खिलाफ लोगों में नाराजगी है और इसी वजह से उन्हें विरोध का सामना करना पड़ा। अधिकारी ने आरजी कर मामले की पीड़िता को लेकर भी ममता पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि ममता को पीड़िता के परिवार से मिलकर माफी मांगनी चाहिए थी। अधिकारी ने कहा कि पीड़िता की मां हालिया विधानसभा चुनाव में भाजपा विधायक चुनी गई हैं। उन्होंने ममता बनर्जी से सवाल किया कि वह पीड़िता की दूसरी बरसी पर उसके परिवार से मिलने क्यों नहीं गईं। ममता बनर्जी ने अपने काफिले पर हुए विरोध के लिए भाजपा समर्थकों को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने आरोप लगाया कि दिवंगत तृणमूल कार्यकर्ता के परिवार को भाजपा समर्थकों की ओर से धमकाया जा रहा था। ममता ने मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी पर भी निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि राज्य सरकार के इशारे पर पुलिस बल का इस्तेमाल किया जा रहा है। इस बीच कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अशोक गहलोत ने ममता बनर्जी के काफिले पर कथित हमले की निंदा की। उन्होंने भाजपा पर राज्य में अराजकता और भय का माहौल पैदा करने का आरोप लगाया और इसे बदले की राजनीति का गंभीर उदाहरण बताया। घटना के बाद पश्चिम बंगाल की राजनीति में आरोप-प्रत्यारोप तेज हो गए हैं। जहां भाजपा इसे जनता के आक्रोश से जोड़ रही है, वहीं ममता बनर्जी और विपक्षी दल इसे राजनीतिक हिंसा और बदले की कार्रवाई बता रहे हैं।

अरुणाचल पर चीन का 'नक्शा विस्तारवाद' : पूर्व विदेश सचिव भड़के

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के पूर्व विदेश सचिव कंवल सिबल ने अरुणाचल प्रदेश पर चीन के निरंतर दावों और भारतीय स्थानों को बार-बार काल्पनिक नाम देने की उसकी रणनीति पर तीखी प्रतिक्रिया दी है। सिबल ने चीन की इस हरकत को 'कार्टोग्राफिक टेरिटोरियल एक्सपैंशनिज्म' यानी नक्शों के जरिए क्षेत्रीय विस्तारवाद बताया है। उन्होंने कहा कि चीन मनगढ़ंत नाम देकर अपने दावों को मजबूत करने की कोशिश करता है। पूर्व विदेश सचिव सिबल ने भारत द्वारा अरुणाचल प्रदेश के 27 स्थानों और भौगोलिक विशेषताओं के नाम आधिकारिक तौर पर तय करने को चीन की इस विस्तारवादी नीति का करारा जवाब बताया। उन्होंने भारत के सर्वे ऑफ इंडिया के आधिकारिक नक्शों को अपडेट करने और स्थानों को मानकीकृत करने का सीधा परिणाम बताया।

पूर्व विदेश सचिव सिबल ने तिब्बत का जिक्र किया। उन्होंने याद दिलाया कि भारत ने चीनी सेना के तिब्बत पर कब्जे को स्वीकार किया था, लेकिन इसके बावजूद चीन संतुष्ट नहीं है और अब वह भारत के साथ लगते अतिरिक्त इलाकों पर दावा कर रहा है। पूर्व विदेश सचिव सिबल ने कहा कि तिब्बत पर नियंत्रण के बाद चीन पहली बार सीधे भारत के साथ सटा और तभी से वह भारतीय क्षेत्र पर अपनी नज़र गड़ाए हुए है। उन्होंने चीन की क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं को केवल भारत तक सीमित न मानते हुए छोटे देश भूटान का भी उल्लेख किया, जिसे चीन ने अपने क्षेत्रीय दावों से नहीं बख्शा है।

यह बयान तब आया है जब चीनी विशेषज्ञों ने अरुणाचल प्रदेश के 27 स्थानों के नाम तय करने के भारत के फैसले पर आपत्ति जताई है। चीनी पक्ष ने भारत के इस कदम को 'खुद को भ्रम में रखने वाला' बताया है और चेतावनी दी है कि इससे दोनों देशों के संबंधों में सुधार की कोशिशें बाधित हो सकती हैं, साथ ही सीमा विवाद सुलझाने की प्रक्रिया भी मुश्किल हो सकती है। हालांकि, सिबल का मानना है कि भारत का यह कदम चीन की विस्तारवादी नीति के विरुद्ध एक ठोस और आवश्यक प्रतिक्रिया है।

2 सितंबर को राम मंदिर ट्रस्ट की बैठक में नए सीईओ की होगी नियुक्ति

पूर्णकालिक महासचिव पर भी बनेगी सहमति, फिर होगी छंटनी और नई नियुक्ति

अयोध्या (एजेंसी)। राम मंदिर में अब श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के सीईओ की प्रतीक्षा होने लगी है। 2 सितंबर को प्रस्तावित ट्रस्ट की बैठक में नए सीईओ की नियुक्ति हो सकती है। इसी बैठक में ट्रस्ट को पूर्णकालिक महासचिव का भी चयन किया जाएगा। यही कारण है कि अंतरिम महासचिव कृष्ण मोहन ट्रस्ट कर्मियों का आंतरिक स्थानांतरण करके और लगातार निगरानी बढ़ाकर मंदिर की कई व्यवस्थाओं का संचालन तो करा रहे हैं, लेकिन अभी किसी की नई नियुक्ति या छंटनी नहीं की है।

हालांकि यह अवश्य है कि अंदरखाने पूर्व पदाधिकारियों के करीबियों व रिश्तेदारों को चिह्नित कर लिया गया है। चढ़ावे की धनराशि में चोरी सामने आने और दो ट्रस्टियों के त्यागपत्र के बाद ट्रस्ट कर्मियों और सेवादारों में बड़ी हलचल है। एसआइटी और पुलिस जांच जारी रहने से कई कर्मचारी काम तो कर रहे हैं, लेकिन उनमें भय है। इनमें अधिकांश ऐसे कर्मी हैं, जिनकी नियुक्तियां पूर्व पदाधिकारियों ने ही की थी। सूत्रों का कहना है कि ज्यादातर नियुक्तियां पूर्व पदाधिकारियों की ही सिफारिश पर होने के कारण अभी किसी को निकाला नहीं जाएगा।

माना जा रहा कि अचानक बड़ी संख्या में कर्मियों की छंटनी से मंदिर की व्यवस्थाओं के संचालन की मुश्किल खड़ी हो जाएगी। यही वजह है कि 2 सितंबर की बैठक का इंतजार किया जा रहा है। बैठक में सीईओ और पूर्णकालिक महासचिव के नाम पर सहमति बन जाएगी, तो महासचिव के निर्देशन में नए सीईओ अपने मुताबिक कई पदों पर नियुक्तियां करेंगे। सहयोगी के रूप में अपना अलग स्टाफ रखेंगे, जिससे मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं को पर्याप्त सुविधाएं प्रदान की जा सकें और व्यवस्थाओं का सुचारू ढंग से संचालन हो सके। एक पदाधिकारी ने बताया कि आगामी बैठक में ही ट्रस्ट के प्रवक्ता और सचिव की भी नियुक्ति होगी। इसके साथ चयन समिति की ओर से प्रस्तुत तीन नामों के पैनल पर विचार-विमर्श कर मुख्य कार्यकारी अधिकारी और किसी ट्रस्टी को पूर्णकालिक महासचिव का पद भी दिया जाएगा।

पहले रविदासजी के गुरुघर पर बुलडोलर चलाया अब उनके नाम पर कर रहे राजनीति

-मायावती ने समाज को बीजेपी और आप की राजनीति से सतर्क रहने की अपील की

लखनऊ (एजेंसी)। बहुजन समाज पार्टी सुप्रीमो मायावती ने संतगुरु श्री रविदास के तुगलकाबाद स्थित गुरुघर को 2019 में ढहाए जाने और इसके विरोध में हुए आंदोलन का मुद्दा उठाते हुए बीजेपी और आम आदमी पार्टी पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि पंजाब चुनाव नजदीक आते ही बीजेपी संतगुरु श्री रविदासजी के नाम पर कलश यात्रा निकालकर समाज को उनके बेगमपुरा के लक्ष्य से भटकाने की कोशिश कर रही है। मायावती ने समाज को बीजेपी और आप की राजनीति से सतर्क रहने की अपील करते हुए संत रविदासजी के सम्मान, समानता और न्याय के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया। मायावती ने एक्स पर लिखा- जैसा कि विदित है कि 10 अगस्त 2019 को

दिल्ली के तुगलकाबाद में संतगुरु श्री रविदासजी के पवित्र गुरुघर को बुलडोजर और भारी पुलिस बल की मौजूदगी में ढहा दिया गया। इसके विरोध में देशभर की संगत जब लोकतांत्रिक ढंग से सड़कों पर उतरी तो तब उन्हें लाठीचार्ज, आंसू गैस, गिरफ्तारियां और मुकदमों आदि का सामना करना पड़ा। काफी लोगों को जेल भी जाना पड़ा। मायावती ने कहा कि गुरुघर की भूमि भी छीन ली गई और आज भी संगत को लोहे के अस्थायी टीन शेड में अपने गुरुजी को माथा टेकने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। यह स्थिति करोड़ों श्रद्धालुओं की भावनाओं को आहत करती है और आज भी समाज की स्मृति में अंकित है। उन्होंने लिखा- अब पंजाब चुनाव नजदीक आते ही वही बीजेपी रविदासजी के नाम पर कलश यात्रा निकालकर गुरुजी के बेगमपुर शहर के लक्ष्य से समाज को भटकाने का प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि ऐसे में समाज बीजेपी और आम आदमी पार्टी की राजनीति से सतर्क रहें। पराधीनता का अंत और बेगमपुरा का संकल्प संतगुरु श्री रविदासजी सम्मान यात्रा जो तुगलकाबाद से धलेता गांव तक पहुंच रही है, जिसमें समूह संगत सादर आमंत्रित हैं।

भारत ने 4,800 बांग्लादेशियों को किया डिपोर्ट, ढाका कह रहा- सिर्फ 73 ही आए

- सीमा पर अवैध घुसपैठियों के खिलाफ कार्रवाई के आंकड़ों में बड़ा अंतर

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत-बांग्लादेश सीमा पर अवैध घुसपैठियों के खिलाफ कार्रवाई को लेकर भारत-बांग्लादेश के आंकड़ों में बड़ा अंतर सामने आया है। भारत की ओर से जहां पश्चिम बंगाल में बीजेपी सरकार बनने के बाद करीब 4,800 लोगों को डिपोर्ट किए जाने का दावा किया गया है, वहीं बांग्लादेश का कहना है कि 2026 में अब तक उसने केवल 73 लोगों को ही स्वीकार किया है। ऐसे में सवाल उठ रहा है कि दोनों देशों के आंकड़ों में इतना अंतर क्यों और बाकी लोगों को कहां रखा गया है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक कोलकाता से करीब 90 किलोमीटर दूर हाकिमपुर चेकपोस्ट पर सीमा सुरक्षा बल द्वारा वाहनों को रोककर दस्तावेज और पहचान पत्रों की जांच की जा रही है। हालांकि, सीमा पर बांग्लादेश जाने वाले लोगों की कोई बड़ी भीड़ दिखाई नहीं दे रही है। स्थानीय अधिकारियों के मुताबिक पकड़े गए संदिग्ध लोगों को सीधे सीमा पर नहीं लाया जाता, बल्कि पहले होल्डिंग सेंटर भेजा जाता है। हाकिमपुर चेकपोस्ट पर तैनात एक बीएसएफ अधिकारी ने बताया कि कार्रवाई शुरू होने के शुरुआती दौर में सीमा पर काफी भीड़ थी। उस समय सप्ताह में करीब 10-15 बांग्लादेशियों को वापस भेजे जाने की बात कही गई, लेकिन अब कई-कई सप्ताह तक कोई व्यक्ति डिपोर्टेशन के लिए सीमा पर नहीं पहुंचता है।

अधिकारी के मुताबिक सरकार बदलने के बाद एक समय करीब 200 लोगों को सीमा के रास्ते वापस भेजा गया था। वहीं अन्य लोगों को उत्तर 24 परगना जिले में बनाए गए तीन अस्थायी होल्डिंग सेंटरों में भेज दिया गया। हाकिमपुर के अलावा पेट्रापोल और महदीपुर चेकपोस्ट पर भी इसी तरह की स्थिति नजर आई। वहां बांग्लादेश जाने वाले लोगों की कतारें या बड़ी भीड़ नहीं मिली। अधिकारियों के मुताबिक इसका एक प्रमुख कारण प्रक्रिया में बदलाव है। अब कार्रवाई के बाद लोगों को सीधे बॉर्डर पर लाने के बजाय पहले होल्डिंग सेंटर में रखा जाता है। वहां उनकी पहचान और अन्य कानूनी प्रक्रिया पूरी की जाती है। इसके बाद ही उन्हें सीमा तक ले जाकर डिपोर्टेशन की प्रक्रिया आगे बढ़ाई जाती है। जानकारी के मुताबिक राज्य में बनाए गए 11 होल्डिंग सेंटरों में 300 से ज्यादा लोग रखे गए हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक आंकड़ों को लेकर विवाद तब और बढ़ा जब केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने 28 मई को दावा किया था कि सरकार बनने के बाद रोजाना 5,000 से 10,000 बांग्लादेशी वापस जा रहे हैं। इसके बाद 8 जून को सीएम सुवेंदु अधिकारी ने करीब 4,800 लोगों के डिपोर्ट किए जाने की बात कही थी। इसके विपरीत बांग्लादेशी अधिकारियों के आंकड़े इन दावों से काफी

अलग हैं। ढाका का कहना है कि 2026 में अब तक केवल 73 लोगों को ही स्वीकार किया गया है। 4,096 किलोमीटर लंबी भारत-बांग्लादेश सीमा पर दोनों देशों के आंकड़ों में यह अंतर अब जांच और राजनीतिक बहस का विषय बन गया है।